वार्षिक पत्रिका

फरवरी 2026

अनमोल रिश्ता

Primary Teachers' Education College

Gurwa, Sitagarh, Hazaribag, Jharkhand-825303

From the Provincial

'A small seed planted in 1958 has become a source of great hope for many to improve life through PTEC quality training.'

Dr. Fr. Vincent Hansdak S.J.

Provincial
Hazaribag Jesuits Society

Dear staff and students,

It is a proud moment for all of us to be part of the history of 75 years old Jesuit legacy of commitment to the education and training of youth in the province of Hazaribagh. Back in the year 1951, six Australian Jesuits from Melbourne sailed through many windy nights in rough seas and arrived in Jharkhand, India to share their life with countless unknown people who were deprived of the basic human rights and the necessities of life. The six Jesuit pioneers worked tirelessly in various places and in different capacities to enhance the life of the local people, especially among the youth.

Primary Teachers Education College, (PTEC), Gurwa is the result of one such endeavours of the Australian Jesuits. In 1958, an agricultural training institute (ATI) was started, which later was turned into a Teachers' Training Institute (TTI) and currently it is known as the Primary Teachers' Education College (PTEC). Right from the beginning, the Jesuits had very clear goals and objectives in starting any educational institute. They had understood the need and power of the education for the locals, specially, Tribals, Dalits, Ganjhus, etc. They believed that education is the key element which is able to provide knowledge, power and strengthen their community to strive for the better future of their children.

At present, PTEC, Gurwa has proved to be the source of knowledge and also become the centre of holistic learning for many youths. PTEC, though small in size when compared to many other institutions, but because of its quality focussed training to students, it has impacted a larger section of the society across the Jharkhand state. A small seed planted in1958 has become a source of great hope for many to improve life through PTEC quality training.

I personally acknowledge and appreciate the hard works of the principal and staff of PTEC in providing quality of teaching and training to students and in helping them shape their future. Also, I wish that may PTEC continue to spread its fragrance of quality service to all students so that the dreams of the Jesuit pioneers continue to bear abundance of fruits.

I wish and pray for all PTEC staff and students for a fruitful academic year ahead!
Sincerely Yours,
Fr. Vincent Hansdak, SJ
Provincial Superior,

From the

Principal's desk

Dr. Fr. P.J. James, SJ

आधुनिक, परिवर्तनशील, अनिश्चित, जटिल दुनिया में नए शिक्षकों की चुनौतियाँ

शिक्षण वृत्ति में हमेशा से ही समायोजित और अनुकूलन करने की क्षमता, लचीलापन, रचनात्मकता और मज़बूती की ज़रूरत रही है। आज की दुनिया की अस्थिरता, अनिश्चितता, जटिलता और अस्पष्टता शिक्षकों के लिए चुनौतियाँ कई गुना बढ़ा दी गई हैं। कक्षा में जाना अब सिर्फ़ सामग्री प्रस्तुत करने के बारे में ही नहीं है; यह तेज़ी से होने वाले बदलावों, अप्रत्याशित हालात और छात्रों की अलग-अलग ज़रूरतों को समझते हुए स्थिरता बनाए रखने के बारे में है।

उतार-चढ़ाव में परिवर्तन का प्रबंधन करना

उतार-चढ़ाव का मतलब है बदलाव की तेज़ी और अप्रत्याशितता। नए शिक्षकों के लिए, यह बदलते पाठ्यक्रम, बदलती तकनीकी और महामारी या नीति सुधारों जैसी रुकावटों में दिखता है। नए निर्देशों या अचानक होने वाली घटनाओं के कारण ध्यान से तैयार किए गए पाठ योजनाओं को रातों-रात बदलना पड़ सकता है। यह बदलाव उन नए शिक्षकों को परेशान कर सकता है जो अभी भी कक्षा प्रबंधन की बुनियादी बातें सीख रहे हैं। चुनौती यह है कि लचीलापन और मज़बूती बनाई जाए, साथ ही यह पक्का किया जाए कि विद्यार्थियों को सीखने के अच्छे अनुभव मिलते रहें।

अनिश्चितता में अनजान चीज़ों से निपटना

शिक्षा में अनिश्चितता, छात्रों के अप्रत्याशित व्यवहार, राष्ट्रीय और वैश्विक घटनाओं के अनजान रास्ते से पैदा होती है। नए टीचर अक्सर ऐसे सवालों से जूझते हैं जैसे: क्या विद्यार्थी इस तरीके से जुड़ेंगे? माता-पिता कैसे जवाब देंगे? अगर ऑनलाइन क्लास के दौरान टेक्नोलॉजी फेल हो जाए तो क्या होगा? पूर्वानुमान न कर पाने से आत्मविश्वास कम हो सकता है और चिंता हो सकती है। इससे निपटने के लिए, शिक्षक को प्रयोग करने की मानसिकता विकसित करनी चाहिए। अनिश्चितता को खतरे के तौर पर नहीं, बल्कि अपने छात्रों के साथ नवीनता लाना और सीखने के मौके के तौर पर देखना चाहिए।

जटिलता में अलग-अलग ज़रूरतों को पूरा करना

वर्ग कक्ष समाज का छोटा स्वरूप प्रस्तुत करता है, जो सांस्कृतिक विविधता, सीखने के अलग-अलग तरीके, और भिन्न-भिन्न सामाजिक,आर्थिक पृष्ठभूमि दिखाते हैं। नए टीचर को प्रशासकीय कामों, छात्रों के भावनात्मक समर्थन और समावेशी तरीकों के साथ सिखाने के लक्ष्यों का संतुलन करना चाहिए। ये मांगें अक्सर कार्य-तनाव जन्य थकावट (burn out) की ओर ले जाती है, खासकर जब शिक्षक विशेष आवश्यकता शिक्षा (Special Needs Education - SPED), डिजिटल साक्षरता या सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL - Social-Emotional Learning जैसे मुद्दों को संभालने के लिए तैयार नहीं होते हैं। मजबूत सहयोग कौशल विकसित करने और मार्गदर्शन प्राप्त करने से नए शिक्षकों को मुश्किल माहौल से निपटने में मदद मिल सकती है।

अस्पष्टता के बीच धुंधली सीमाओं का सामना करना

अस्पष्टता तब होती है जब हालात साफ़ नहीं होते या जब कई मतलब निकाले जा सकते हैं। अध्यापकों के लिए, इसका अर्थ हो सकता है कि मूल्यांकन मानदंड साफ़ न होना , नीतियों में टकराव होना, या हाइब्रिड लर्निंग माहौल में भूमिकाएँ साफ़ न होना, इत्यादि। नए टीचर खुद से सवाल कर सकते हैं कि वे शिक्षार्थियों का सहयोगी, विषयवस्तु विशेषज्ञ, या परामर्शदाता हैं। यह स्पष्टता की कमी आत्मविश्वास के साथ फ़ैसले लेने में बाधा डाल सकती है। अस्पष्टता को दूर करने के लिए, शिक्षकों को लगातार अपनी भूमिका का पुन: मूल्यांकन करना चाहिए और इसे विद्यार्थियों और स्कूल की बदलती ज़रूरतों के साथ जोड़ना चाहिए।

काबिलीयत बनाना

इन चुनौतियों के बावजूद, आज की दुनिया आगे बढ़ने के मौके भी देती है। उतार-चढ़ाव नव परिवर्तन का अवसर देता है, अनिश्चितता मज़बूती बढ़ाती है, जटिलता सहयोग का मौका देता है, और अस्पष्टता सोचने-समझने को बढ़ावा देती है। नए टीचर जो इन चीज़ों को अपनाते हैं, वे चुनौतियों को ताकत में बदल सकते हैं। इस माहौल में आगे बढ़ने के लिए पेशेवर विकास, साथियों के नेटवर्क और लगातार सीखना ज़रूरी औजार हैं। इसके अलावा, IPP (Ignatian Pedagogical Paradigm (संत इग्नसिउस की शिक्षा पद्धति) और Inquiry-based learning (खोज - आधारित शिक्षा) जैसे शैक्षणिक ढांचा (pedagogical framework) अपनाने से उथल-पुथल के बीच संरचना मिल सकता है, जिससे शिक्षकों को संदर्भ, अनुभव, चिंतन, कार्य और मूल्यांकन पर केन्द्रित करने में मार्गदर्शन मिल सकती है।

MESSAGE *From the* EDITOR

Cyprian Surin

Sushila Ekka

Doli Lakra

हमारे महाविद्यालय के वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह हमारे प्रशिक्षुओं की प्रतिभा, परिश्रम एवं रचनात्मकता का इंद्रधनुष की तरह प्रतिबिम्बित करता है।

हमारा महाविद्यालय सिर्फ शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की कार्यशाला है। यहाँ ज्ञान के साथ-साथ संस्कार, अनुशासन एवं सामाजिक ज़िम्मेदारी भी सीखते हैं। इस वर्ष प्रशिक्षुओं ने शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं खेल-कूद के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

यह पत्रिका इन्हीं विभिन्न उपलब्धियों एवं महाविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों को रोचक ढंग से संजोने का एक प्रयास है। अतः एक गुलदस्ते की तरह विभिन्न मालियों के द्वारा लाये विभिन्न रंगों के फूलों से सजाया है। हम आशा करते हैं कि यह अंक पाठकों को प्रेरित करेगा और उनमें नई ऊर्जा का संचार करेगा।

अंत में, हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य, व्याख्याताओं, लेखक एवं लेखिकाओं का, जिनके सहयोग से यह अंक संभव हो पाया, आभार व्यक्त करते हुए कामना करता हैं कि हम सब मिलकर ज्ञान, सद्भाव एवं प्रगति कि ओर बढ़ते जाएँ।

अनुक्रमणिका

1. नव वर्ष 2025 – जेवियर भेंगरा
2. वार्षिक वनभोज – रिया रीतिका हेम्ब्रोम
3. वनभोज – अलिसा तिर्की
4. ब्रिटो डे – अनुपमा किंडो
5. वार्षिक खेलकूद – मनीषा टेटे
6. वर्मी कम्पोस्ट
7. कचड़ा-प्रबंधन
8. विज्ञान प्रदर्शनी – दिव्य लकड़ा
9. रिश्तों की हकीकत – व्याख्याता डोली लकड़ा
10. कॉलेज डे – फा. अनिल आईन्द
11. 3 दिवसीय कार्यक्रम का अनुभव – वतिस्ता यादव
12. जीवन एक संघर्ष – अनुजा नेहा पन्ना
13. शैक्षणिक भ्रमण – नीलिमा एंगा पूर्ति
14. शिक्षकों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम
15. तीन दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम
16. 3 days Orientation programme – Atul Vivek Ekka
17. धान रोपनी – अलिशा तिर्की
18. हार्दिक स्वागतम (फा. अनीश हंसदक)
19. वार्षिक खेलकूद का अनुभव – अंजु आइन्द
20. Annual sports day – Akriti Lakra
21. ऑस्ट्रेलिया के मेहमानों का स्वागत
22. श्रद्धांजलि (शिबु सोरेन)
23. विश्व आदिवासी दिवस – प्रीति आईन्द
24. चित्रकला – दीप्ति केरकेट्टा
25. Experience of football match – Susana Cherowa
26. 15 August – Albin Kiro
27. 15 अगस्त का अनुभव – अनिशा एक्का
28. 3 days of drawing class – Beronika Hembrom
29. स्वतन्त्रता दिवस – अनिमा टोप्पो
30. फुटबॉल मैच का अनुभव – रॉबिन्सन बेक
31. शिक्षण अभ्यास – अलिशा तिर्की
32. Micro-teaching – Neeraj Panna
33. सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास – अनुभा टोप्पो
34. सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास – असियन एक्का
35. शिक्षण अभ्यास का अनुभव – अनिवेश डुंगडुंग
36. धान कटनी का अनुभव – तनवी केरकेटटा
37. धान कटनी का अनुभव – सुप्रिया मिंज
38. धान कटनी का अनुभव – डिबर संडी पुर्ती
39. विदाई (श्रीमती उषा गुड़िया)
40. स्वागत (श्री विनय एक्का, सुश्री संजु रंजना होरो)
41. नए छात्र प्रतिनिधि
42. परीक्षा परिणाम (सत्र: 2023-24)
43. उत्कृष्ट उपलब्धि – प्रिंस कुजूर
44. निबंध प्रतियोगिता (प्रथम वर्ष) – प्रथम - निधि खलखो
45. निबंध प्रतियोगिता (प्रथम वर्ष) –द्वितीय - नितेश यादव
46. निबंध प्रतियोगिता (द्वितीय वर्ष) – प्रथम - अनुजा नेहा पन्ना
47. निबंध प्रतियोगिता (प्रथम वर्ष) – द्वितीय – वातिस्ता यादव
48. पोप लियो XIV

नव वर्ष 2025

हर वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी मैं 2025 में नई आशाओं और उम्मीदों को पूरा करने के लिए कुछ मनन-चिंतन किया और इन आशाओं को पूरा करने के लिए ईश्वर से आशीर्वाद लिया। उनकी कृपा पाने के लिए नव वर्ष में ईश्वर से प्रार्थना की। सोच रहा था कि नया साल में दोस्तों के साथ पिकनिक पर जाऊंगा, पर माँ ने जाने से मना कर दिया। मैंने भी माँ की बातें मान ली। उस दिन दिनभर माँ मेरे पास बैठी रही और बहुत सारी बातें की। बातों ही बातों में उसकी आँखों से आँसू आ रहे थे। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि आँसू क्यों आ रहे थे। आखिरकार मैंने पूछ ही लिया। तो वह चुप रही और कुछ भी नहीं बताई। अंत में उन्होंने एक ही बात कही कि जिस प्रकार तुम्हें अपने दोस्तों के साथ समय बिताने का मन करता है, उसी तरह मुझे तुम्हारे साथ समय बिताने का मन करता है। इन सब बातों को सुनकर और माँ कि भावनाओं को देखकर मेरी भी आँखों में आँसू आ ही गए।

हमारे माता-पिता हमारे लिए अपनी खुशियों को त्याग देते हैं। इसलिए हमें उनकी भावनाओं को समझना चाहिए और उनकी खुशियों का भी ख्याल रखना चाहिए।

जेवियर भेंगरा
प्रथम वर्ष 'अ'

वार्षिक वनभोज

जीवन की भागदौड़ से थोड़ा समय चुराना है
अपनों के साथ जीने का मौका नहीं गंवाना है
पिकनिक तो एक बहाना है।

दिनांक 18 जनवरी को महाविद्यालय में वार्षिक वनभोज का आयोजन किया गया था। इस पल का इंतजार हम सभों को बहुत ही बेसब्री से था और वकाई ये लम्हा बहुत ही अद्भुत एवं मनोरंजक ठहरा।

इस वनभोज में अपनों के साथ समय बिताने के साथ-साथ मैं बहुत कुछ सीखी। जैसे-पत्तल सिलना, सामूहिक कार्यों को भी बड़े आसानी से हँसते-हँसते पूरा करना। यह 18 जनवरी वाकई हमारे इस नववर्ष का सुंदर आरंभ था।

खाना-पीना मौज उड़ाना
एक दूजे पे प्यार लुटाना है
कल से फिर काम पे लग जाना है
पिकनिक तो एक बहाना है।

रिया रितिका हेम्ब्रोम
प्रथम वर्ष 'ब'

वनभोज

हर बीते वो दफा
यादें करो तरोताजा वनभोज में
मिलकर अपनों से वनभोज में
साझा करो अपनी खुशियाँ

चेहरे पे मुस्कान लिए
दिल पे आशा लिए
सहभाग बनें वनभोज में
सिखा देगी ये आपको जिम्मेदारियाँ उठाना।

अलिशा तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

मैं अनुपमा किंडो, सभी ब्रिटो दल की ओर से अपने दल का अनुभव आप सबके साथ साझा करते हुए अत्यंत गर्व और हर्ष का अनुभव कर रही हूँ। कहा जाता है कि संत जॉन डी ब्रिटो को समुद्र के तट पर ले जाकर उनका सिर कलम कर दिया गया था, और उनके बलिदान से उस भूमि की रेत उनके रक्त से लाल हो उठी थी। वही लाल रंग साहस, त्याग और अटूट विश्वास का प्रतीक बन गया। हम सभी ब्रिटो दल के सदस्य उसी लाल रंग को अपने उत्साह, परिश्रम और समर्पण के माध्यम से दर्शाने का प्रयास करते हैं।

एक दल के रूप में हमने अनेक गतिविधियों और कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। चाहे रोपा रोपना हो, धान काटना हो, परेड में अनुशासन का परिचय देना हो या खेल-कूद प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा दिखानी हो—हर कार्य को हमने पूरी लगन, एकता और जिम्मेदारी के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। कठिन परिस्थितियों में भी हमने कभी पीछे हटना नहीं सीखा, बल्कि एक-दूसरे का उत्साह बढ़ाते हुए, हौसला बुलंद रखते हुए आगे बढ़ते रहे।

हमारे दल की सबसे बड़ी शक्ति हमारी एकजुटता रही। जब भी कोई सदस्य थका या निराश हुआ, अन्य साथियों ने उसका मनोबल बढ़ाया। इसी आपसी सहयोग, प्रेम और भाईचारे की भावना ने हमें हर चुनौती को अवसर में बदलने की प्रेरणा दी।

हम सभी ब्रिटो दल के सदस्य संत जॉन डी ब्रिटो के जीवन से प्रेरणा लेते हुए यह संकल्प लेते हैं कि उनके बलिदान की भावना को अपने कर्मों, व्यवहार और आचरण में जीवित रखेंगे। हम साहस, सत्यनिष्ठा और सेवा की भावना को अपनाते हुए अपने महाविद्यालय और समाज का नाम रोशन करने का निरंतर प्रयास करेंगे। यही हमारे दल की सच्ची पहचान और हमारा गर्व है।

अनुपमा किंडो

खेलकूद का महत्व

खेल हमारे सर्वांगीण विकास के लिए बहुत ही जरूरी है, क्योंकि यह हमें बहुत ही अच्छी शिक्षा दे जाती है। खेल के माध्यम से हममें आत्मविश्वास, नैतिकता और शिष्टता आती है। खेल हमें अनुशासन में रहना सिखाता है।

हमारे महाविद्यालय में 8 फरवरी को वार्षिक खेलकूद कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। खेलकूद का दिन आते ही ऐसा लगता है मानों त्योहार का मौसम आ गया हो। उस दिन का माहौल भी कुछ ऐसा ही था। उस दिन के हमारे मुख्य अतिथि श्री प्रवीण कुमार जिला शिक्षा पदाधिकारी, हजारीबाग और विशिष्ट अतिथि श्री रजत नाग शिक्षक, शारीरिक शिक्षा, संत ज़ेवियर स्कूल, हजारीबाग थे। मेहमानों का स्वागत झारखंडी माँदर और नगाड़ा की धुन से हुई। माँदर की थाप सुनकर मेरे पैर भी थिरक रहे थे। मेहमानों का स्वागत के बाद हम सभी प्रशिक्षणार्थी परेड और ड्रिल प्रस्तुत किए। इसके बाद हमारा खेलकूद प्रतियोगिता शुरू हुआ। सभों ने खेल में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जैसे-जैसे प्रतियोगिता खत्म हो रही थी, वैसे-वैसे हमारे दिलों की धड़कने भी बढ़ रही थी और लालायित थे अपने दल का परिणाम जानने के लिए। अंतिम में वह पल आ ही गया जब हम सभी का परिणाम हमें बता दिया गया। मेरे दल को हार का सामना करना पड़ा। परिणाम जो भी हो हमारे दल का हौसला कम नहीं हुआ। फिर मेरे दिल ने दस्तक दी **"हार भी जाओ तो गम न करो, फिर से खेलो मगर हौसला कम न करो।"**

मनीषा टेटे
द्वितीय वर्ष 'ब'

हॉली क्रॉस कृषि विज्ञान केंद्र, हजारीबाग की सि॰सजिता के मार्गदर्शन में PTEC में वर्मीकम्पोस्ट के लिए केंचुआ छोड़ा गया। PTEC के प्राचार्य डॉ॰ फा॰ पी॰जे॰ जेम्स ये॰स॰ की अगुआई में यह बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। जो अपने-आप में ही एक उपलब्धि है। केंचुआ खाद जो की जैविक खेती के लिए एक वरदान है। जैविक खेती में केंचुआ खाद (वर्मीकम्पोस्ट) की भूमिका स्वस्थ्य पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण वरदान साबित हुआ है और इसकी सार्थकता राष्ट्रीय एवं अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकारा गया है।

केंचुआ कार्बनिक अवशिष्ट को उपयोगी खाद बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये कार्बनिक अवशिष्ट का कुछ भाग अवशोषित कर लेते हैं और शेष छोटे-छोटे दानेदार विस्टा (मल) के रूप में उत्सर्जित करते हैं। यह उत्सर्जित जीवांश पदार्थ ही वर्मीकम्पोस्ट (केंचुआ खाद) कहलाता है।

वर्मीकम्पोस्ट (केंचुआ खाद) के लाभ :

1. केंचुआ खाद के प्रयोग से मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में पर्याप्त सुधार होता है जिससे भूमि की उर्वरकता लंबे समय तक कायम रहती है।
2. केंचुआ खाद में पौधे के लिए आवश्यक लगभग सभी पोषक तत्व मौजूद होते हैं जो पौधे को आसानी से प्राप्त हो जाता है। जिससे पौधों का अच्छा विकास होता है।
3. केंचुआ खाद में जल ग्रहण करने की क्षमता होती है जो वातावरण से नमी एवं सिंचाई के रूप में पौधों को दिए गए पानी को अवशोषित करती है। अतएव इसका उपयोग करने पर पौधे में बार-बार या अधिक पानी देने की आवश्यकता नहीं होती है।
4. केंचुआ खाद में पौधे को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने वाले जीवाणु, कवक, कीट इत्यादि उपस्थित नहीं होते हैं।
5. केंचुआ खाद में उपस्थित एक्टिनोमाइसिटिज़ अनेक प्रकार के एंटीबायोटिक पदार्थों का सृजन करते हैं जिससे पौधे में कीट व्याधियों से बचाव की प्रतिरोधी क्षमता बढ़ जाती है।
6. केंचुआ खाद से खरपतवारों के बीज नहीं होते, इसलिए इसका प्रयोग करने से खेत में किसी भी तरह के खरपतवार की समस्या नहीं होती है।
7. केंचुआ खाद में अनेक जैव क्रियाशील यौगिक (ऑक्सीजन, जिब्बेरलीन, सायटोकाइनिन, विटामिन, एमिनो एसिड इत्यादि) पर्याप्त मात्रा में मौजूद होते हैं जिससे पौधों में समुचित वृद्धि तथा अधिक उपज देने की क्षमता का विकास होता है।
8. केंचुआ खाद के कणों पर पेराट्रापिक झिल्ली का आवरण होता है जिससे खाद में उपस्थित नमी का शीघ्रता से वाष्पीकरण द्वारा ह्रास नहीं होता और भूमि में दिए गए पानी को अधिक समय तक रोकने में मदद मिलती है।
9. केंचुआ खाद के उपयोग से पैदा किए गए उत्पादों की गुणवत्ता (स्वाद, रंग, रूप, आकार, भंडारण क्षमता इत्यादि) में सुधार होने की वजह से उत्पादों की बिक्री से आय में वृद्धि होती है।
10. केंचुआ खाद का उपयोग करने से उत्पादन लागत घट जाती है।

आओ हम मिलकर प्लास्टिक मुक्त
और
पर्यावरण के अनुरूप पृथ्वी का निर्माण करें

पृथ्वी जो हमारी धरती माँ है, हमें जीवन देती है। हमें तरोताजा हवा प्रदान करती है। हमारे स्वास्थ्य को बेहत्तर रखने के लिए पर्यावरण से संतुलन बना के रखती है। लेकिन हम मानव इसे समझ नहीं पाते और पर्यावरण को विभिन्न प्रकारों से प्रदूषित कर पृथ्वी को असंतुलित करते हैं और हानि पहुंचाते हैं, धरती माँ को दुख देते हैं। उनमें प्रमुख हैं- जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण। इन प्रदूषणों का निपटान हेतु प्रबंधन न करके हम ही बढ़ावा देते हैं। इन्हीं से पर्यावरण को अत्यधिक क्षति पहुँचती है।

पर्यावरण की रक्षा की ज़िम्मेदारी हम सभों की है। सरकार अपने तरीके से प्रदूषण रोकने और पर्यावरण को शुद्ध बनाने का बहुत प्रयास कर रही है। आदर्श नागरिक होने के नाते यह हमारी भी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम साथ मिलकर ईमानदारीपूर्वक पर्यावरण और पृथ्वी को बचाने में कर्तव्य निभाएँ। अतः महाविद्यालय परिसर में भी प्राचार्य की अगुवाई में कचरा प्रबंधन का बीड़ा उठाया गया है। महाविद्यालय, +2 उच्च विद्यालय और मिडिल स्कूल में डस्टबिन की व्यवस्था की गयी है, ताकि कचरे का उचित निपटान किया जा सके।

सूखे पत्तों, घास, पुवाल, पेपर, आदि के उचित निपटान के लिए वर्मी-कम्पोस्ट बनाने की भी व्यवस्था की गयी है, ताकि कचरा भी साफ हो जाय और खेती तथा बागवानी के लिए खाद भी मिल जाय। साथ ही, पर्यावरण भी दूषित न हो।

काँच, लोहा, टीना, आदि के लिए अलग-अलग गड्डों की भी व्यवस्था की गयी है। ताकि उन्हें अलग-अलग रखा जा सके।

रिसाइकल होने वाले प्लास्टिक के लिए भी अलग से एक गड्डा है, जिसमें प्लास्टिक को जमा करने की जरूरत है। प्लास्टिक ही एक ऐसा चीज है जिसे सड़ने में सालों लग जाते हैं। जमीन में रहे तो जल को भूमि के अंदर जाने से रोकता है, जल जैसे – तालाब, कुआं, नदी में रहे तो पानी को बहने में अवरोध उत्पन्न करता है, साथ ही, कचरा का अंबार बनाता है। दोनों ही परिस्थिति में प्लास्टिक पानी को प्रदूषित करता है। प्लास्टिक को अलग रखने से उसे बाद में रिसाइकल के लिए भेजा जा सकता है।

न चाहते हुए भी कुछ चीजों को जलाने की आवश्यकता होती है। अतः एक Incinerator की व्यवस्था की गयी है, जिसमें उपरोक्त कामों में उपयोग न होने की स्थिति में जलाया जा सकता है।

आशा है आप सभी हमारे कचरा प्रबंधन के अभियान में कदम-से-कदम मिलाकर साथ देंगे और भविष्य में दूसरों को भी इस अच्छी आदत में सहभागी बनाएँ। आइये, हम सब मिलकर एक स्वच्छ पर्यावरण बनाने का संकल्प लें और अगली पीढ़ी को स्वस्थ पर्यावरण का उपहार दें।

रिश्तों की हकीकत

आदमी जब पत्तल में खाना खाता था
मेहमान को देख वह हरा हो जाता था
स्वागत में पूरा परिवार बिछ जाता था।

बाद में जब वह मिट्टी के बर्तन में खाने लगा
रिश्तों को जमीन से जुड़कर निभाने लगा।

फिर जब पीतल के बर्तन उपयोग में लेता था
रिश्तों को साल, 6 महीने में चमका लेता था।

लेकिन बर्तन काँच के जब से बरतने लगे
एक हल्की सी चोट में रिश्ते बिखरने लगे

अब बर्तन थर्मोकोल पेपर के इस्तेमाल होने लगे
सारे सम्बन्ध भी अब Use & Throw होने लगे।

व्याख्याता
डोली कड़ा

विज्ञान प्रदर्शनी

28 फरवरी विश्व विज्ञान दिवस इस दिन हमारे महाविद्यालय में विभिन्न प्रकार की कलाओं का प्रदर्शन हुआ। जैसे- आर्ट एंड क्राफ्ट, हाथों की कला और विज्ञान से संबंधित कलाएं। विज्ञान ही एक ऐसी कला है जिसमें सोच-विचार के साथ प्रयोग प्रदर्शन अहम् होता है। जिसके द्वारा व्यक्ति के अंदर छिपे गुण व हुनर बाहर आते हैं। इसी हुनर के साथ सभी प्रशिक्षुओं ने अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया। मैं समूह संख्या एक में थी और हमारा प्रकरण था चंद्रयान-3, जो कि बहुत ही रुचिकर व उत्साहवर्धक था। मेरे लिए इस प्रोजेक्ट का सबसे खास अनुभव रहा कि शुरुआत में मैं शिक्षकों व बच्चों के सामने प्रोजेक्ट का विवरण देने के लिए बहुत ही डर रही थी। मन में घबराहट थी, लेकिन मैं हार नहीं मानी। मन को शांत करते हुए मैंने ठाना कि मैं कर सकती हूँ, आगे बढ़ी और मेरे अंदर इतना आत्मविश्वास आ गया कि मैं बच्चे तो क्या शिक्षकों के सामने भी हमारे प्रोजेक्ट का विवरण दी। विज्ञान हमें हमारे जीवन के लिए बहुत कुछ शिक्षा दे जाती है। स्वयं में आत्मविश्वास लाना, अपने अंदर छिपे गुणों को पहचानना जिसको कि हम वातावरण में स्वतंत्र प्रयोग करते हैं। जिंदगी भी विज्ञान के प्रयोग जैसी ही है, जितनी बार प्रयोग करेंगे, उतना ही बेहत्तर होगा।

दिव्य लकड़ा
द्वितीय वर्ष 'ब'

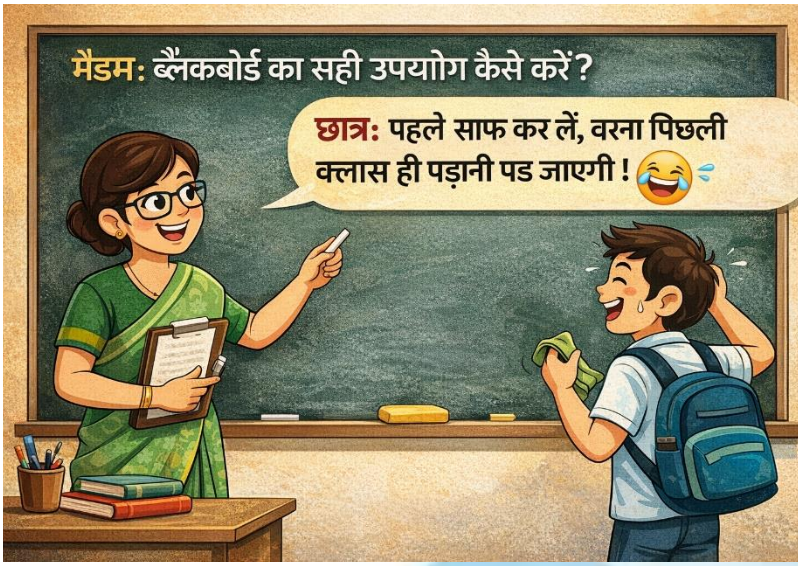

संत योसेफ, धन्य कुँवारी मरियम के वर का महोत्सव

संत योसेफ, धन्य कुँवारी मरियम के वर का महोत्सव पूरी कलीसिया के साथ मिलकर मनाया जाता है। संत योसेफ का नाम संतों में सबसे ऊपर है। क्योंकि जिस प्रकार माता मरियम को उनकी धार्मिकता, आज्ञाकारिता और विनम्रता के कारण ईश माता होने का गौरव प्राप्त हुआ, उसी प्रकार संत योसेफ को भी उसकी धार्मिकता, आज्ञाकारिता और विनम्रता के कारण ईश पुत्र येसु मसीह के पालक पिता होने का गौरव प्राप्त हुआ। अपने ईश्वरमय और आदर्श जीवन के कारण आज संत योसेफ कलीसिया का संरक्षक संत है। कई संस्थानों और धर्म संघों का संरक्षक संत है। संत योसेफ हमारे इस संस्थान के लिए, हम सबों के लिए कई रूपों में आदर्श है और आज हम उसके चरणों में आते हैं ताकि हम उनके संरक्षण में उनकी तरह अनेक बातों में आदर्श इंसान बन सकें। हम अपने लिए और इस संस्थान के लिए प्रार्थना करें कि हमें संत योसेफ के संरक्षण में ईश्वरीय आशीष और कृपा प्राप्त हो। संत जोसेफ को उनके पाँच गुणों के द्वारा हम उन्हें गहराई से समझ सकते हैं-

1. संत योसेफ, धन्य कुँवारी मरियम का वर

संत जोसेफ धन्य कुँवारी मरियम का सच्चा वर, आदर्श वर या पति था। वह कुँवारी मरियम के सुख-दुःख का सच्चा साथी था। कुँवारी मरियम पवित्र आत्मा से गर्भधारण की। जब जोसेफ को पता चला कि वह पेट से है, उसे त्यागने की सोचने लगा तो प्रभु के दूत की मदद से ईश्वर ने उसे शक नहीं करने का विश्वास दिलाया। उन्होंने ईश्वर की बातें सुनी और उन्हें अपनाया। इस प्रकार वह कुँवारी मरियम का सच्चा साथी, विश्वासी, रक्षक और सहायक बना।

2. पवित्र परिवार का अगुआ

संत जोसेफ पवित्र परिवार का अगुआ बना। हमें भी पवित्र परिवार बनाना है। धर्म के नियमों का पालन करना है। बच्चों को धार्मिक शिक्षा देना है। पवित्र परिवार का अगुआ जहाँ येसु का जन्म और पालन-पोषण हुआ। पवित्र परिवार की देख-भाल करना है। परिवार में सभी दुःख तकलीफों को मिलकर सहना, दूर करना है। ईश्वर की मुक्ति योजना में सहभागी होना है।

3. आदर्श यात्री:

हम सभी इस दुनिया में एक यात्री हैं, आशा के तीर्थयात्री। संत योसेफ का जीवन यात्रा बहुत ही कठिन था। उन्होंने बेथलेहेम और मिश्र देश की कठिन यात्रा की। साथ ही वहाँ से वापस नाजरेथ आये। उन्होंने आशा और भरोसा रखा।

बारह वर्ष की उम्र में येसु का मंदिर में बिछुड़ना और तीसरे दिन मिलना। समझना है कि तीन दिनों की यात्रा वे कर चुके थे, फिर वहाँ से वापस आकर येसु को पाते हैं।

4. मेहनतकश लोगों का आदर्श

संत योसेफ मजदूरी करनेवालों का आदर्श है। वे एक बढ़ाई का काम करते थे। हम जानते हैं कि बढ़ाई का काम उस समय बहुत ही कठिन और धैर्यपूर्ण काम था। आज की तरह मशीन उपलब्ध नहीं थे। उन्होंने काम को ही पूजा माना और मेहनत की।

5. धार्मिता का आदर्श

उन्होंने यहुदी धर्म के नियम का पालन किया। ईश्वर की योजना को समझना और उसकी इच्छा पर चला। उनमें विनयशीलता, मौनशीलता या शांतिप्रिय और विनम्रता भरी थी। साथ ही विवेक, भक्ति और श्रद्धा से पूर्ण थे। संत जोसेफ के गुणों में विश्वास, आशा, ईश्वर के प्रति प्रेम, दया, आज्ञाकारिता, गरीबी, शुद्धता, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा सहज ही झलकता है। धर्मनिष्ठ, धर्मात्मा, विश्वस्त तथा विचारशील सेवक थे संत योसेफ।

फा. अनिल आइंद
रेक्टर SSC

3 दिवसीय कार्यक्रम का अनुभव

"वो कहते हैं गुजरे हुए लम्हें कभी लौट कर नहीं आते उसी प्रकार यह तीन दिवसीय कार्यक्रम आकर चला भी गया जो कभी अब लौट कर नहीं आएगा। जब मुझे इस कार्यक्रम के बारे में पता चला मैं बहुत उत्सुक हो गई थी, क्योंकि आचार खाना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

पहले दिन सिस्टर अलमा ने हमें आर्ट एण्ड क्रफ्ट से जुड़े हुए कई प्रकार की चीजें बनाना सिखाया। फिर दूसरे दिन फीनाइल, मोमबत्ती और आचार बनाना सीखाया। उस दिन बारीश बहुत ज्यादा और तेज हो रही थी, जिसके कारण जिन्हें आग के माध्यम से आचार बनाना था उन्हें दिक्कत हुई। लेकिन मैं और मेरे ग्रुप के लोगों को आग की आवश्यकता नहीं थी इसलिए हमने बड़ी मस्ती से आचार बनाया। तीसरे दिन मसरूम की खेती करना और कुछ जड़ी-बूटी के बारे में हमें अच्छी-अच्छी जानकारी दी।

तीन दिवसीय कार्यक्रम मेरे लिए बहुत नया था। इस प्रकार का अनुभव मुझे कभी नहीं मिला था। हम सब ने एक-दूसरे की मदद करते हुए, एक-दूसरे का आचार चखते हुए कार्यक्रम को अंजाम दिया। मुझे सिस्टर के द्वारा सिखाई गई सभी बातों को तो नहीं सीख पाई लेकिन आचार जैसे सेशन को अच्छी प्रकार सीखी, जिसका मैं भविष्य में लाभ जरूर उठा पाऊंगी। सि. अलमा गुलाब बड़ा को पूरे मन और हृदय से मैं व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद देती हूँ कि हमारे साथ मिलकर उन्होंने इतने अच्छे-अच्छे व्यावसायिक पदार्थों को बनाना सिखाया जिसका उपयोग हम भविष्य में कर सकें।

वतिस्ता यादव
प्रथम वर्ष 'अ'

जीवन एक संघर्ष

जीवन एक संघर्ष है और संघर्ष का सामना करना एक कला है। इस कला को निखारने के लिए हमें फादर राजेन्द्र टेटे की प्रेरणादायक बातों को सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हम सचमुच में भाग्यशाली थे कि फादर ने 3 घंटे में ही हमारे जीवन को सफल बनाने के मूल मंत्रों को बताया और स्वयं के संघर्ष द्वारा हमें प्रेरित किया।

हर सफल व्यक्ति के पीछे उसकी कड़ी मेहनत, लगन, त्याग और समर्पण का हाथ होता है, परंतु सफल व्यक्ति को भी सफल बनने के लिए असफलता का कड़वा रस चखना ही होता है। व्यक्ति को जीवन में असफलता और हार मिलती ही है। बस उस असफलता और हार को एक सीख के रूप में ग्रहण करना है और सफलता की राह में निरंतर आगे बढ़ना है।

उनकी बातों से मुझे यह संदेश मिला कि जीवन में हर व्यक्ति अपने कदमों तले सफलता पाना चाहता है। परंतु सफलता केवल उनके कदमों को चूमती है जो संघर्ष करते हैं। अतः सफलता पाने के लिए संघर्ष करना ही जीवन का एक बहुमूल्य उद्देश्य है।

अनुजा नेहा पन्ना
प्रथम वर्ष 'ब'

शैक्षणिक भ्रमण

हर मंजिल की एक पहचान होती है
और हर सफर की एक कहानी!

दिनांक 20 मार्च 2025 को हम शैक्षणिक भ्रमण के लिए अपने हॉस्टल प्रांगण से लगभग 3 बजे शाम को निकले थे। मैंने पहली बार अपने सहपाठियों के साथ इतनी दूर की यात्रा की।

न मंजिल के लिए
न रास्तों के लिए
मेरा ये सफर रहा
खुद से खुद की पहचान के लिए।

जैसे ही हम अपने गंतव्य स्थान पहुंचे, मेरी खुशी इतनी बढ़ गयी कि खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। मैंने सबसे पहले रेगिस्तान के जहाज को खड़ा पाया और उस पर सवारी की तो ऐसा लग रहा था मानो पूरे रेगिस्तान का चक्र लगा कर आई और ऐसे भी लग रहा था कि हम भी रानी लक्ष्मीबाई की तरह घोड़े में सवार होकर किसी युद्ध में जा रहे हैं। समुद्र के पानी का भी हमने भरपूर आनंद लिया।

दूसरे दिन हम सभी चिल्का लेक गए। जैसे ही हम नाव में बैठे बारिश भी अधिक होने लगी, बिजली कड़कने लगी। दिल में घबराहट इतनी बढ़ गई कि कहीं हम इसी लेक में तो न डूब जाएँ। लेकिन फिर भी हमने वीडियो लेना और सेल्फी लेना नहीं छोड़ा। जब बारिश और तेज होने लगी तो हमने त्रिपाल से अपनी नाव को पूरी तरह से ढँक लिया और मुझे ऐसा लगने लगा कि हम किसी तम्बू के अंदर हैं। नाव में हम कभी खड़े होते तो कभी बैठते थे। हमने लगभग डेढ़ घंटे तक नाव में पानी के ऊपर समय बिताया और वापस लौट आए। इस तरह हम लोगों ने कई ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया और कई खट्टे-मीठे अनुभव प्राप्त किए और हमारा शैक्षणिक भ्रमण का दिन समाप्त हो गया।

किसी जगह के बारे में जिंदगी भर
सुनने से अच्छा है कि एक बार
उसे जाकर खुद देख लो!

नीलिमा एंगा पूर्ति
द्वितीय वर्ष 'ब'

शिक्षकों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम सम्पन्न

शिक्षकों के लिए दिनांक 28 जून को उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता फा. सैजू ने "भारत के संविधान और कानून" विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। यह सेमिनार शैक्षिक और जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था, जिसमें विचार विमर्श का भी आयोजन किया गया।

सेमिनार का उद्देश्य : इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य भारत के संविधान और कानून के महत्व को समझाना था। इसमें भाग लेने वाले शिक्षकों को संविधान की मूलभूत बातें, उसके निर्माण का इतिहास, और वर्तमान में उसके अनुप्रयोग के बारे में जागरूक किया गया। साथ ही, कानून के पालन और नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता भी बढ़ाई गई।

मुख्य वक्ता और उनके विचार : फा. सैजू ने अपने वक्तव्य में संविधान के मूल सिद्धांतों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संविधान हमारे देश का आधार है, जो सभी नागरिकों को समान अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करता है। उन्होंने यह भी कहा कि कानून का सम्मान और पालन हमारे देश की समृद्धि का आधार है। उन्होंने मुख्यतः भारत के पाँच कानून, विभिन्न तरह के कोर्ट, न्याय संबंधी बातें, एफ़आईआर और सनहा दर्ज करने की प्रक्रिया, एफ़आईआर दर्ज करने से लेकर जजमेंट तक होने वाली प्रक्रियाओं के बारे उदाहरण सहित बतलाया।

विचार विमर्श का सत्र : सेमिनार में विचार विमर्श का सत्र भी शामिल था, जिसमें प्रतिभागियों ने अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई, जैसे कि कानून का पालन, भ्रष्टाचार से लड़ाई, और नागरिक अधिकारों का संरक्षण। प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किए और सुझाव दिए कि कैसे संविधान और कानून का प्रभावी कार्यान्वयन किया जा सकता है।

निष्कर्ष : यह सेमिनार भारत के संविधान और कानून के महत्व को समझाने में सफल रहा। इससे सभी प्रतिभागियों में जागरूकता और जिम्मेदारी का भाव जागृत हुआ। यह आयोजन हमारे देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण कदम था। हमें चाहिए कि हम संविधान का सम्मान करें और कानून का पालन कर देश के विकास में योगदान दें।

हार्दिक-स्वागतम

महाविद्यालय में दिनांक 19 जुलाई का दिन खुशी व गम दोनों का दिन रहा। गम इस बात का रहा कि हमारे बीच एक साल से काम करते आ रहे मिलनसार, कर्मठ, जुझारू और जवान फा. आरोक्य राज का स्थानांतरण महुआडांड़ पारिश में सहायक पल्ली पुरोहित के रूप में हुआ। वे इस महाविद्यालय में कोषाध्यक्ष सह ETE विषय शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। गम के आँसू अभी निकले ही नहीं थे कि हमारे बीच फा. अनीश हंसदक का पदार्पण डाल्टेंगंज से हमारे महाविद्यालय में हुआ, जिन्होंने फा. राज के कार्य को संभाला। और हमारे महाविद्यालय के आर्थिक प्रबंधन को सशक्त करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। महाविद्यालय परिवार फा. अनीश हंसदक का हार्दिक अभिनंदन करता है।

आप के आने से हम सभी अत्यंत गर्व और उत्साहित महसूस कर रहे हैं। आशा है कि हम सभी साथ मिलकर न केवल शैक्षिक ज्ञान प्राप्त करने, बल्कि जीवन के मूल्यों, नैतिकताओं और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी समझने का प्रयास करेंगे। नए अध्याय की शुरुआत हो और महाविद्यालय एक उत्कृष्ट स्थान पर पहुंचे।

तीन दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम

तीन दिवसीय ओरिएंटेशन का उद्देश्य प्रशिक्षणार्थियों को केवल शिक्षक बनने तक सीमित न रखते हुए, उन्हें शिक्षक बनने की **पवित्र बुलाहट**, समाज और आध्यात्मिक जीवन के प्रति **उत्तरदायित्व**, और शिक्षा के व्यापक दृष्टिकोण से परिचित कराना था।

उद्देश्य

1. सीखने की गहरी भूख और आत्म-नियंत्रण पैदा करना।
2. स्वयं की पहचान, गुण-दोष पर चिंतन और आत्म-विश्वास निर्माण।
3. बच्चों की प्रतिभा व रुचि को पहचाना और उन्हें उभारना।
4. समय-पाबंदी, अनुशासन और स्मार्ट तरीकों से कार्य का महत्व समझना।
5. मेंटोरिंग, समूह सहयोग और सकारात्मक मानसिकता का विकास।

प्रमुख गतिविधियाँ और अनुभव

- **मिस्सा पूजा एवं सर्वधर्म प्रार्थना** ने आध्यात्मिक उन्नति व समरसता की भावना जागृत की।
- **Ice-breaking खेलों** ने परिचय, स्मरण शक्ति और सतर्कता बढ़ाई।
- **Journaling / डायरी लेखन** ने आत्म-ज्ञान, आत्म-अनुशासन और आत्म-समर्थन को प्रोत्साहित किया।
- **मेंटोर ग्रुप का अनुभव** एक छोटे परिवार की तरह था—जहां विचारों का आदान-प्रदान, समर्थन और प्रेरणा साझा किया गया।
- **समूह सहयोग** ने समझाया कि "साथ चलें, साथ बढ़ें, साथ रहें" कितना मूल्यवान है।
- **शिक्षक बनने की गहराई**: यह केवल डिग्री से नहीं बल्कि व्यक्ति के समर्पण और योग्य गुणों से होता है।

मिली शिक्षाएँ

- **गहराई से जीवन जियो, साहस से कार्य करो** — सतही प्रयासों से समाधान नहीं।
- **एक किताब, एक कलम, एक बच्चा**—शिक्षक की भूमिका से दुनिया बदल सकती है।
- **समय-पाबंदी और अनुशासन** से लक्ष्य की प्राप्ति संभव होती है।
- **सहानुभूति, धैर्य और सकारात्मक दृष्टिकोण**—अच्छे शिक्षक की पहचान हैं।
- **दीपक की तरह बनना**—जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश दे।

निष्कर्ष

इस त्रिदिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम ने शिक्षण पेशे के प्रति एक समग्र, गहन और प्रेरणादायक दृष्टिकोण प्रदान किया। यह केवल **शिक्षक बनने तक सीमित** नहीं था, बल्कि **शिक्षक होने की ऊँचाई** को समझने और आत्मसात करने का मार्ग प्रशस्त किया। कार्यक्रम ने शिक्षा को सामाजिक उत्तरदायित्व, आत्म-सम्वर्धन, आध्यात्मिकता और नैतिकता से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

3-Day Orientation Program

The 3-Day Orientation Program at PTEC was thoughtfully organized to welcome the new batch of prospective teachers for 2025-2027. Over three days, the program aimed to facilitate a smooth transition into the college environment, foster connections, and clarify the academic path ahead in teacher education.

Day 1 began with a spiritual invocation, seeking divine guidance for the academic year and the journey ahead. This opening set a reflective and positive tone for the program. An ice-breaking session was conducted to help participants get to know each other and build camaraderie through engaging activities. The Principal, Dr. Fr. P.J. James, delivered a warm welcome address and introduced the teaching and non-teaching staff, emphasizing their support for our learning journey.

Day 2 featured insightful sessions led by experienced educators on various aspects of teacher education, including the role of a teacher, time management, and the importance of journalism. Participants were divided into mentor groups, providing personalized guidance and support. Mentor Fr. Arockia Raj shared his experiences, motivating students to approach their studies with curiosity and purpose.

On Day 3, the focus was on understanding the college calendar, important academic dates, events, and opportunities. Faculty members explained the curriculum structure, course components, and requirements, helping students gain clarity and confidence about their academic journey.

In conclusion, the 3-day orientation was a meaningful and well-organized program that welcomed, informed, and inspired participants. It introduced us to the college's academic framework and fostered a sense of community and purpose. With gratitude and excitement, we are now prepared to step forward as future educators, ready to learn and grow.

Atul Vivek Ekka
First year

धान रोपनी

भींगे मौसम का कहर था बीते कुछ समय से
सारा शहर, गली गाँव आसमां गीला था
हल्की धूप, हल्की छाँव बिखेर रहीं थी
दिन शुक्रवार को।

इस अलबेले मौसम में चारों दल
लाल, नीले पीले हरे रंग से,
खेतों को ढंके थे चादर की तरह
और मिट्टी के साथ लगे खेलने

बनिहार बन जेवियर दल
अपने कर्मठ हाथों से बित्ता-बित्ता
उखाड़ रहे थे बीड़े और
बचे दल बीड़े को रोप रहे थे खेतों में

हम हैं पुत्र-पुत्रियाँ किसान के
मेहनत हम है दिखाते खेतों में
मेहनत हमारी रंग लाती कुछ महीनों बाद
देकर नये-नये अनाज फसल

प्रसन्न हो उठता हृदय हमारा
पाकर अच्छे फसल को
मन में गौरव की धुन लिये.
गौरवान्वित एहसास करते
होकर पुत्र-पुत्रियाँ किसान के।

अलिशा तिर्की
द्वितीय वर्ष 'ब'

वार्षिक खेलकूद का अनुभव

हमारे महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पूरे महाविद्यालय का वातावरण उत्साह और ऊर्जा से भर गया था। चारों ओर खेलभावना और उत्सव का माहौल दिखाई दे रहा था।

मैं भी इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए अत्यंत उत्साहित थी। इससे पहले मैंने कभी इतने बड़े स्तर पर आयोजित खेलकूद में भाग नहीं लिया था, इसलिए मन में डर और संकोच दोनों थे—लोग क्या कहेंगे, मैं कर पाऊँगी या नहीं। लेकिन जैसे ही मैदान में पहुँची, मेरा सारा डर दूर हो गया और मन में आत्मविश्वास बढ़ता गया।

इस वर्ष मुझे कई नए खेलों के बारे में जानने का अवसर मिला—जैसे **गोला फेंक**, **भाला फेंक**, **चक्का फेंक** आदि। ये खेल मेरे लिए बिलकुल नए थे। दूसरों को इन खेलों में भाग लेते हुए देखकर मुझे भी प्रेरणा मिली। शुरुआत में मुझे लगा कि शायद मैं यह सब नहीं कर पाऊँगी, परंतु प्रयास करते-करते बहुत कुछ सीखने को मिला।

सबसे चुनौतीपूर्ण अनुभव मेरे लिए **800 मीटर दौड़** था। ऐसा लग रहा था जैसे यह "पहाड़ तोड़ने" जैसा कठिन कार्य हो। मन में बार-बार सवाल उठ रहा था—क्या मैं दौड़ पाऊँगी? क्या मैं बीच में थक जाऊँगी? परंतु अपने मनोबल और जज़्बे के साथ मैंने धीरे-धीरे दौड़ शुरू की और अंत तक पहुँचकर जीत हासिल की। उस क्षण मुझे अत्यंत खुशी हुई और आत्मविश्वास भी बढ़ा।

इस प्रतियोगिता का शुभारंभ महाविद्यालय प्रांगण से मुख्य अतिथि की अगवानी के साथ हुआ। उन्हें बैज और गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया। इसके बाद तीनों संस्थानों के विद्यार्थियों ने मिलकर आकर्षक **मार्च-पास्ट** और **ड्रिल** प्रस्तुत किया। ड्रिल मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था, और इसे सीखना रोमांचक रहा।

प्रतियोगिताएँ जैसे-जैसे आगे बढ़ीं, छात्रों का उत्साह भी बढ़ता गया। प्रत्येक प्रतिभागी ने पूरे मन और जोश के साथ हिस्सा लिया। प्रतियोगिता समाप्त होने के बाद सभी ने एक-दूसरे को बधाई दी और खूब मस्ती भी की।

इस पूरे आयोजन ने मुझे यह सिखाया कि **किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए प्रयास, आत्मविश्वास और मेहनत आवश्यक है।** पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि खेल से अनुशासन, आत्मविश्वास और शारीरिक क्षमता बढ़ती है।

अंजु आइन्द
प्रथम वर्ष 'अ'

Annual Sports Day, 2025

"Talent and intelligence may win games, but teamwork and dedication win championships." Games and sports play an important role in education. They keep us physically fit, mentally active, and socially connected.

This year's Annual Sports Day was one of the most exciting and awaited events of our institution. It was held on **6th December 2025**, and it was my first experience participating in this grand event. The Sports Day was organized in collaboration with the **Middle School, High School and PTEC**, which made it even more vibrant and memorable.

Our college has four houses—**Red, Yellow, Green, and Blue**—and I belong to the **Blue House**. Students actively participated in various events, showcasing their skills, enthusiasm, and sportsmanship. Through these activities, I got an opportunity to strengthen my bonds with my trainee-mates and teachers.

The motivational words delivered by the chief guest truly touched my heart and encouraged me to participate more actively and learn new things in life.

All the events were conducted smoothly. Everyone's hard work, preparation, excitement, and active participation could clearly be seen. The dedication it took to make the event successful brought bright smiles to the faces of our guests and audience. They expressed their appreciation and gave very positive feedback.

Personally, I feel very happy because **our house—Blue House—won the Championship Trophy this year.** From being in the 3rd position last year, our house jumped to the 1st position. This was possible only because we worked as a team, supported one another, and gave our best.

Winning or losing is a natural part of sports. What matters most is the learning and growth that come with participation. Everyone learned something valuable from this event. Therefore, each participant deserves congratulations and best wishes for being a part of this grand programme of our institution.

Akriti Lakra
First year 'B'

अतिथियों का स्वागत

16 जुलाई को महाविद्यालय में आस्ट्रेलिया से दो विशिष्ट अतिथियों का आगमन हुआ। महाविद्यालय परिसर तक आने में प्रोविंशियल डॉ. फा. भिन्सेंट हंसदक और फा. बॉब स्लेटरी ने उनकी अगुवाई की। महाविद्यालय में उनका धूमधाम से स्वागत किया गया। मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. फा. पी.जे.जेम्स, सुपीरियर फा. सिलास चंद्र मिंज, फा. आरोक्य राज, सभी शिक्षक और प्रशिक्षणार्थी उपस्थित थे।

"एक जीवन, जो आंदोलन बना; एक नाम जो झारखंड की आत्मा बनी।"

यह पंक्ति पूरी तरह चरितार्थ होती है श्री शिबू सोरेन जी पर। पूरे झारखंडी समाज की आवाज़, संघर्ष और पहचान की गाथा है। जिनका जीवन सिर्फ एक व्यक्ति की कहानी नहीं, बल्कि श्री शिबू सोरेन जी 'दिशोम गुरु' के नाम से प्रसिद्ध हैं- एक ऐसे जननेता, जिन्होंने आदिवासी अधिकारों, ज़मीन, जंगल और जल की रक्षा के लिए जीवन भर संघर्ष किया। झारखंड राज्य के निर्माण से लेकर उसके नेतृत्व तक, श्री शिबू सोरेन का योगदान अमिट है। उनका जीवन एक मिसाल है अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की, जनहित के लिए राजनीति की, और आत्म-सम्मान के लिए आंदोलन किया। श्री शिबू सोरेन, जिन्हें सम्मानपूर्वक "दिशोम गुरु" या "गुरुजी" के नाम से जाना जाता है, झारखंड के एक प्रतिष्ठित आदिवासी नेता थे। उन्होंने अपना जीवन आदिवासी समुदाय के अधिकारों के लिए लड़ने और अलग झारखंड राज्य की स्थापना के लिए समर्पित कर दिया था.

हार्दिक श्रद्धांजलि

1. प्रारंभिक जीवन और शिक्षा (Early Life and Education) श्री शिबू सोरेन का जन्म 11 जनवरी, 1944 को तत्कालीन बिहार के रामगढ़ जिले (अब झारखंड में) के नेमरा गांव में हुआ था. उनका बचपन का नाम शिवलाल था, जिसे बाद में शिबू सोरेन के नाम से जाना जाने लगा. वह संथाल आदिवासी समुदाय से ताल्लुक रखते थे. उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गोला हाई स्कूल, हजारीबाग से प्राप्त की थी.

जब वह स्कूल में थे, तब उनके पिता सोबरन सोरेन की कथित तौर पर साहूकारों द्वारा हत्या कर दी गई थी. इस दुखद घटना ने उन्हें आदिवासियों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने और साहूकारों के शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित किया. उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़कर आदिवासियों को जागरूक करने और एकजुट करने का संकल्प लिया.

2. सामाजिक सक्रियता और प्रारंभिक आंदोलन (Social Activism and Early Movements) श्री शिबू सोरेन 1962 में, जब वह केवल 18 वर्ष के थे, तो उन्होंने संथाल नवयुवक संघ की स्थापना की, जिसका उद्देश्य आदिवासी युवाओं को सामाजिक बदलाव के लिए संगठित करना था. उन्होंने धनकटनी आंदोलन भी शुरू किया, जिसका लक्ष्य आदिवासियों को साहूकारों के शोषण से मुक्ति दिलाना था. उन्होंने आदिवासी भूमि अधिकारों और जंगल के संरक्षण के लिए वकालत की. उन्होंने सामूहिक खेती, पशुपालन और रात्रि पाठशाला जैसे कार्यक्रम भी चलाए, उनका संघर्ष आदिवासियों को उनकी सांस्कृतिक पहचान और आत्म-सम्मान के लिए प्रेरित करने का एक प्रतीक बना.

3. झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) की स्थापना (Formation of Jharkhand Mukti Morcha) 1972 में, श्री शिबू सोरेन ने वामपंथी ट्रेड यूनियन नेता ए. के. रॉय और कुर्मी महतो नेता बिनोद बिहारी महतो के साथ झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) की स्थापना की थी. महतो उस समय पार्टी के अध्यक्ष बने और श्री शिबू सोरेन को महासचिव के रूप में नियुक्त किया गया. इस पार्टी का मुख्य उद्देश्य आदिवासियों के लिए न्याय, भूमि अधिकार और अलग झारखंड राज्य की स्थापना करना था. झारखंड क्षेत्र में सामंती शोषण के खिलाफ ज़मीनी स्तर पर लामबंदी ने उन्हें आदिवासी समुदाय के बीच एक प्रतीक के रूप में स्थापित किया.

4. राजनीतिक करियर और उपलब्धियाँ (Political Career and Achievements) श्री शिबू सोरेन 1980 में पहली बार दुमका से लोकसभा के लिए चुने गए थे. इसके बाद उन्होंने सात बार 1989-1998 और 2002-2019 तक दुमका से लोकसभा चुनाव जीता. राज्यसभा सदस्य (Member of Rajya Sabha) वह 2002 में कुछ समय के लिए और फिर जून 2020 से 2025 में अपने निधन तक राज्यसभा के सदस्य रहे. एक प्रभावशाली राजनीतिक नेता के रूप में, उन्होंने राष्ट्रीय मंच पर आदिवासी समुदाय की आवाज़ उठाई.

श्री शिबू सोरेन 2004 और 2006 के बीच यूपीए सरकार में केंद्रीय कोयला मंत्री भी रहे. उन्होंने तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया: 2005 में 10 दिनों के लिए, अगस्त 2008 से जनवरी 2009 तक, और दिसंबर 2009 से मई 2010 तक.

झारखंड राज्य के गठन में दिशोम गुरु शिबू सोरेन की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिसे 15 नवंबर 2000 को बिहार से अलग करके बनाया गया था.

आदिवासी अधिकारों के लिए आवाज़ (Voice for the Tribal Rights) उन्होंने भूमि अधिकारों, सामाजिक समानता और गरीब समुदायों के कल्याण के लिए मज़बूती से आवाज़ उठाई थी.

5. संघर्ष और चुनौतियाँ (Struggles and Challenges) दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन का राजनीतिक जीवन संघर्षों और चुनौतियों से भरा था. उन्हें अपने पूर्व निजी सचिव शशि नाथ झा की 1994 की हत्या में कथित संलिप्तता के लिए दिल्ली की एक अदालत ने दोषी ठहराया था. उन्हें 2004 में केंद्रीय कोयला मंत्री रहते हुए, 1975 के चिरुडीह मामले में गिरफ्तारी वारंट के बाद इस्तीफा देना पड़ा था, जिसमें उन पर 10 लोगों की हत्या का आरोप था. बाद में उन्हें जमानत मिल गई थी और उन्हें फिर से मंत्रिमंडल में शामिल किया गया था. इन कानूनी चुनौतियों ने उनके राजनीतिक करियर पर गहरा प्रभाव डाला था.

6. अंतिम जीवन और विरासत (Later Life and Legacy) दिशोम गुरु शिबू सोरेन लंबे समय से बीमार चल रहे थे और उन्हें किडनी संबंधी बीमारी थी. उन्हें जून 2025 में दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में भर्ती कराया गया था. 4 अगस्त, 2025 को 81 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया. उनके निधन से झारखंड की राजनीति में एक युग का अंत हो गया. उन्हें आदिवासियों के अधिकारों के लिए लड़ने और झारखंड राज्य के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए याद किया जाएगा. दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन का जीवन झारखंड के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने अपने जीवन को आदिवासी समुदायों के उत्थान और झारखंड के विकास के लिए समर्पित कर दिया। वह एक संघर्षशील नेता थे, जिन्होंने अपने समुदाय के लिए आवाज़ उठाई और उनके अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी.

एक आवाज़ जो सदियों तक गूंजती रहेगी, आज मौन हो गई। 'दिशोम गुरु', सिर्फ एक नाम नहीं था - वह आदिवासी अस्मिता, संघर्ष और स्वाभिमान का जीवंत प्रतीक थे। उन्होंने ज़मीन से जुड़कर, ज़मीन के लिए लड़ना सिखाया। उन्होंने जंगल, जल और ज़मीन की भाषा बोली और अपने लोगों को वह हक़ दिलाया, जो वर्षों से छीना जा रहा था। उनकी आँखों में आदिवासियों के भविष्य का सपना था, और उनके कदमों में आंदोलन की आग। उनकी एक पुकार पर हजारों लोग उठ खड़े होते थे क्योंकि वह केवल नेता नहीं, मार्गदर्शक थे।

आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका जीवन, उनका संघर्ष और उनके विचार हमेशा हमारी आत्मा में जीवित रहेंगे। उनका दिखाया रास्ता न्याय, आत्मगौरव और एकता का हमारे लिए दीपस्तंभ बना रहेगा। झारखंड की धरती उन्हें सदैव याद रखेगी। जनजातीय समाज उन्हें हमेशा 'दिशोम गुरु' के रूप में पूजेगा। 'दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन, आपकी आत्मा को अनंत शांति मिले।"

विश्व आदिवासी दिवस

जंगल बिना जीवन अधूरा है, और आदिवासी बिना जंगल अंधेरा है।
जल, जंगल और जमीन ही आदिवासी की असली पहचान है।

हमारे शिक्षक महाविद्यालय में 9 अगस्त 2025 को *विश्व आदिवासी दिवस* बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत से पहले यह बताया गया कि आदिवासी समुदाय में कौन-कौन सी जातियाँ आती हैं — जैसे उराँव, मुंडा, खड़िया, हो, संथाली और खोरठा आदि।

सभी भाई-बहनों ने अपने नृत्यों और गीतों के बारे में जानकारी दी — किस मौसम या पर्व में कौन-सा गीत गाया जाता है, उसका महत्व और परंपरा। इससे मुझे आदिवासी संस्कृति के बारे में नई जानकारी मिली।

मंच पर महिलाओं ने नृत्य के साथ-साथ अपनी मधुर आवाज़ और नगाड़ा, मंदर, ढोलक की ताल पर *रंगारंग* नृत्य प्रस्तुत किया। यह देखकर स्पष्ट हुआ कि आदिवासी परंपरा आज भी जीवंत है और हमारी एकता, प्रेम, स्नेह और उत्साह में झलकती है।

विश्व आदिवासी दिवस का उद्देश्य न केवल दुनिया भर के आदिवासियों के अधिकारों, बल्कि उनके जल, जंगल, जमीन और पर्यावरण को संरक्षण देने के साथ-साथ उनकी सामाजिक, आर्थिक और न्यायिक सुरक्षा को बढ़ावा देना है। यही कारण है कि हर वर्ष 9 अगस्त को यह दिवस मनाया जाता है।

प्रीति आइन्द
प्रथम वर्ष 'ब'

चित्रकला

अगस्त का महीना आया
तीन दिवसीय चित्रकला का कार्यक्रम आया।
प्राचार्य है महान
जिसने कौशल को बढ़ावा दिया।

सुनहरा अवसर लाया
उत्साह चित्रकारी को लाया
छुपी कलाकृति को जागृत किया।

मन में उमंग
हाथ में जोर
कागज की टुकड़ों में
रंगत लाने को

पेंसिल की लकीरों से
चित्रित किया रंग-बिरंगे
फल-फूल और प्रकृति के
मनमोहक दृश्य को

कठिनाई थी चित्रकारी में
ललक थी सीखने की
किया वादा हम कर सकते

रंगों के मिलावट से
बने आकर्षक पेंटिंग
जिसने जीवन डाला
फीका कागजों में।

दीप्ति केरकेटटा
प्रथम वर्ष 'अ'

स्वतंत्रता दिवस

मेरा देश है सबसे प्यारा
15 अगस्त को गूँजा नारा

PTEC के प्रांगण में
ड्रम के मधुर धुन में
परेड करते लाल, हरा, पीला, नीला दल से
गुजरते हैं झंडे को सलामी देते मन से
चाहे हिंदू हो या मुस्लिम हो
ईसाई हो या सिख हो

सभी लोग एकत्र होकर
सम्मान करते झंडे को सलामी देकर
मेरा देश है सबसे प्यारा
मेरा देश है सबसे न्यारा

स्वतंत्रता का है जश्न मनाएँ
एक-दूसरे को सच्चाई का पाठ पढ़ायें
शहीदों को हम दिल से याद करें
हम सभी मिलकर उनका सम्मान करें।

अनिमा टोप्पो
द्वितीय वर्ष 'ब'

Independence Day Experience

On 15th August 2025, we celebrated the 79th Independence Day, remembering our freedom from British rule and the sacrifices of our freedom fighters.

The day began with a holy mass, followed by the flag hoisting by our chief guest, Rev. Fr. P. J. James. After that, we had the march-past, patriotic speeches, and cultural programs. Among them, I especially liked a speech expressed through poetry, which was very inspiring. This Independence Day was a memorable experience for me, filling me with pride and motivating me to serve my nation.

Albin Kiro
First Year ‘A’

15 अगस्त का अनुभव

15 अगस्त 1947 को हमारा भारत देश स्वतंत्र हुआ। यह दिन प्रत्येक भारतीय को एक नई शुरुआत और स्वतंत्रता की याद दिलाता है। यह दिवस हमें भारतीय होने के गौरव का विशेष स्मरण कराता है।

इसी स्मरण में हमारे महाविद्यालय में भी 15 अगस्त 2025 को स्वतंत्रता दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। प्रातः 7:30 बजे मिस्सा पूजा का आयोजन हुआ, जिसका अनुष्ठान *फा. जोन तिर्की द्वारा* किया गया।

मिस्सा समाप्त होने के बाद सभी छात्र-छात्राएँ महाविद्यालय के प्रांगण में एकत्र हुए। सबसे पहले लीडर के द्वारा कमांड दिया गया, फिर सम्मानपूर्वक ध्वजारोहण किया गया और सभी ने मिलकर राष्ट्रीय गान बड़े आदर और गर्व के साथ गाया। इसके बाद परेड का आयोजन हुआ। परेड में सभी छात्र-छात्राएँ अनुशासन के साथ कदम मिलाते हुए आगे बढ़ रहे थे। परेड में बैंड ग्रुप भी सम्मिलित था, जिससे कार्यक्रम और भी आकर्षक लग रहा था। परेड के पश्चात सभी विद्यालयों की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इन कार्यक्रमों में गीत, नृत्य और झाँकियों के माध्यम से देशभक्ति की भावना को जीवंत किया गया। विशेषकर झाँकी में यह दर्शाया गया कि भले ही हमारा देश आज़ाद हो चुका है, परंतु हमें अपने जीवन में सच्ची आज़ादी और मानवता की ओर बढ़ना चाहिए। यह प्रस्तुति बहुत प्रभावशाली लगी। सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद सभी ने मिलकर देशभक्ति के नारे लगाए।

इस पूरे आयोजन से मन आनंदित हो उठा। मैं यही कहना चाहूँगी कि आने वाले वर्षों में भी हम सभी को 15 अगस्त इसी उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाना चाहिए।

अनिशा एक्का
प्रथम वर्ष 'अ'

Three Days of Drawing: My Creative Journey

Day 1: Joy and Discovery

On the first day of the drawing class, I felt an overwhelming sense of happiness. As soon as I started sketching, I discovered my deep enjoyment for the process. It was the first time that I truly engaged with drawing—and the moment I met the instructor; I was struck by his profound knowledge and creativity. Learning from someone so inspiring made me even more enthusiastic.

Day 2: Challenges and Inspiration- The second day was a mixture of determination and frustration. Some drawings were difficult and even boring to attempt. I struggled with the lines, shapes, and ideas—I almost lost interest. Yet, the instructor's laughter and warmth were infectious. His joy and passion for art reignited my own. Watching how the drawings live and breathe inspired me to push through my doubts.

Day 3: Effort and Satisfaction- On the final day, I focused intently on drawing the figure of a girl. At first, choosing and blending colours felt dull and awkward—I couldn't quite place them right. But I kept trying, revising my strokes and colour choices. Then, finally, everything clicked. I completed the drawing beautifully. Overwhelmed by a wave of happiness, I realized how much I genuinely enjoyed creating art.

Reflection- These three days took me on an emotional rollercoaster—from eager excitement, through struggle, to wholehearted pride. First, there was sheer joy; then, a pause where doubt almost took over; finally, a triumph born of persistence. It taught me that creative expression isn't always effortless—but the reward at the end is deeply fulfilling.

Beronika Hembrom
1st year 'A'

Experience of Football Match

Football is one of the most popular games in the world, and it is also one of my favourites. A football match was played between our college boys and the SCC brothers. While watching the game, I felt very excited and enjoyed it a lot.

In the beginning, our college team was not fully prepared, and as a result, they conceded two goals. But after that, our boys became stronger, used their energy wisely, and started playing very well. I watched the match with great interest and supported my college team with full enthusiasm.

Football is not only a source of enjoyment but also a game that keeps our body healthy and fit. Although our college team did not win the match, we learned something valuable. Failure teaches us important lessons, and it motivates us to do better in the future.

Susana Cherowa

फुटबॉल मैच का अनुभव

15 अगस्त भारतवर्ष के लिए अत्यंत खुशी और गर्व का पर्व है। इस दिन को हम भारतवासी बड़े धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाते हैं। इस शुभ अवसर पर हमारे महाविद्यालय में PTEC और SSC **की टीम** के बीच फुटबॉल मैच का आयोजन भी होता है। इस साल भी फुटबॉल मैच का आयोजन हुआ।

मुझे बहुत खुशी हुई, क्योंकि खेल केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं, बल्कि आपसी मेल-मिलाप, प्रेम, अनुशासन और जुनून को भी प्रकट करता है। खेल में सभी खिलाड़ी मिलकर एक ही लक्ष्य के लिए संघर्ष करते हैं और यहीं से टीम भावना का विकास होता है।

मैच के दौरान अनेक रोचक दृश्य देखने को मिले। जब भी गोल होता, खिलाड़ी ही नहीं बल्कि दर्शक भी बच्चों की तरह खुशी से झूम उठते। मैंने देखा कि बड़े-बड़े लोग भी तालियाँ बजाकर और नाचकर उत्साह व्यक्त कर रहे थे। यह क्षण बहुत ही आनंददायक था और मुझे अपार खुशी मिली। इस खेल से मुझे यह शिक्षा मिली कि खेल वास्तव में हमारे **जीवन-शैली** का हिस्सा होना चाहिए। यह हमें सिखाता है कि हमेशा सजग और तैयार रहना चाहिए, क्योंकि कभी भी अप्रत्याशित परिस्थिति सामने आ सकती है। हमारे खिलाड़ियों के साथ भी ऐसा हुआ – एक ही मिनट में दो गोल हो गए क्योंकि वे उस समय पूरी तरह तैयार नहीं थे।

जीवन में हार और जीत लगी रहती है। हार से निराश होने के बजाय हमें अपनी गलतियों से सीखना चाहिए और अगली बार उन्हें सुधारकर और बेहतर प्रदर्शन करना चाहिए। वास्तव में **जो हार को स्वीकार करता है और हार से सीखकर आगे बढ़ता है, वही सच्चा बाजीगर कहलाता है।**

इस फुटबॉल मैच ने मुझे न केवल आनंद दिया बल्कि जीवन के लिए महत्वपूर्ण संदेश भी दिया।

रॉबिन्सन बेक
प्रथम वर्ष 'अ'

शिक्षण अभ्यास

जब हुई पुकार नाम लिस्ट की
घड़कन तेज सी हो गई दिल की
मन में थी तमन्ना जानने की उन दोस्तों को
जिसके साथ जाना मुझे था।

जानकर नाम दोस्तों की खुश हो गई मै
नये चेहरों से मिलकर थोड़ी हैरान हो गई
मिलकर साथ उनके निकल गई करने
खोज विद्यालय की
गली-गली भटक हमें मिल गया हमारा विद्यालय।

पाकर समर्थन विद्यालय से हुई हमे प्रसन्नता
शिक्षण अभ्यास में हो गई दोस्ती हमारी
चॉक, पेंसिल, डस्टर, पुस्तक व बच्चों से
खूब निखारा हमने अपनी प्रतिभा व गुण इनके साथ
पढ़ना, पढ़ाना, खेलना, खेलाना
बन गई थी अहम हिस्सा जीवन की।

थे बच्चे शरारती, पर थे शिक्षक मस्तमौला
जब हो जाते थे निराश हम, हाथ व साथ
देकर बढ़ाया हमारा हौसला
चलकर हर कदम हमारा
सिखाया हमें बनना बच्चों के प्रथम शिक्षक

विदाई के पल थे नम
हर आँखों में आँसू थे.
ढेर सारी शुभकामनाएँ लेकर विदा हो गए हम
शिक्षण अभ्यास न सिर्फ मेरा अनुभव है.
पर यह बन गया यादगार पल जीवन के मेरे।

अलिशा तिर्की

Microteaching Experience

To become a teacher is not enough — one has to be a *good teacher* with passion, honesty, responsibility, and time management. Microteaching gave us the opportunity to practice these qualities. Through this practice, I not only learned teaching skills but also developed confidence, creativity, and enthusiasm for teaching.

In the process of microteaching, I became more aware of *how to teach* and *what to teach*. I learned to present lessons in a simple and easy manner, which will be very helpful in preparing effective lesson plans in the future. Microteaching made me proud of my ability to teach a topic in an interesting and meaningful way.

I also observed my fellow trainees and mentors, which was a valuable learning experience. Our mentor (No. 4) Sir Niraj guided us with patience and encouragement. Whatever shortcomings we had in our attitude or practice were corrected in a supportive and positive environment.

Overall, microteaching was a wonderful and enriching experience for me. It helped me improve my teaching style, boosted my confidence, and inspired me to work towards becoming an ideal teacher.

Neeraj Panna
1st Year 'A'

अनुभव : सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास का

सुनते ही सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास का नाम.
आता था मन में मेरे ख्याल,
वह है बड़ा - सा भूत।

जाने को उसके सामने लगता था डर बड़ा।
18 अगस्त से 2 सितम्बर के वे दिन,
थे मेरे लिए बड़े ही खास।

सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के पहले ही हो गया
मेरे पैर का प्लास्तर, चलने में थी परेशानी।
डर और जिज्ञासा के साथ किया मैंने शुरु इसे
धीरे- धीरे करके दूर किया गया मेरी कमजोरियों को,
बढ़ाया गया हौसला मेरा, बढ़ा आत्मविश्वास मेरा।

मिला मुझे वहाँ सभों का साथ,
पायी मैं खुद को पहचान।
अब लगा मुझे बिना अभ्यास के
आदर्श शिक्षिका बनना है मुश्किल।
मिला मुझे अवसर, अभ्यास मध्य विद्यालय में जाने का,

देखकर वहाँ नन्हें-नन्हें बच्चों को दिल हो गया खुश
कभी पढ़ाते थे सहपाठियों को बच्चे समझ कर,
आज सचमुच के बच्चे थे सामने मेरे
जिज्ञासा देख उनकी, आया मुझे पढ़ाने में बहुत आनन्द
ये जो है कुछ दिनों के हसीन पल,
जीवन में मेरे हमेशा रहेंगे याद !

अनुभा टोप्पो
प्रथम वर्ष 'अ'

शिक्षण अभ्यास का अनुभव

8 सितंबर 2025 से 4 नवंबर 2025 तक का शिक्षण अभ्यास मेरे लिए बहुत ही विशेष और यादगार रहा। जब मुझे यह पता चला कि मुझे एक नए विद्यालय में जाकर पढ़ाना है, तो मन में उत्साह के साथ-साथ थोड़ी घबराहट भी थी। नया स्कूल, नया वातावरण, नए बच्चे और नए शिक्षकों से मिलने की जिज्ञासा मन में थी।

मैंने अपने तीन साथियों के साथ इस सफर की शुरुआत बहुत उत्साह के साथ की। विद्यालय पहुँचने पर बच्चों की संख्या देखकर थोड़ी चिंता हुई कि क्या मैं इतने सारे विद्यार्थियों को संभाल पाऊँगा? लेकिन जब कक्षा में गया, तो बच्चों के प्यारे व्यवहार और उनकी जिज्ञासा ने मेरा डर दूर कर दिया।

शुरुआती दिनों में कुछ कठिनाइयाँ आईं, लेकिन विद्यालय के शिक्षकों और प्रधानाध्यापिका के प्रोत्साहन ने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया। उन्होंने हर समय हमारा मार्गदर्शन किया, जिससे हम सभी प्रशिक्षणार्थियों ने पूरी निष्ठा और मेहनत से अपना कार्य पूरा किया।

हमारे समूह के सभी सदस्य एक-दूसरे की मदद करते थे और टीम भावना के साथ आगे बढ़ते रहे। इस अभ्यास के दौरान मैंने बच्चों से संवाद स्थापित करना, कक्षा का प्रबंधन करना और प्रभावी ढंग से पढ़ाना सीखा।

अंत में, मैंने यह अनुभव किया कि शिक्षक बनना वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन यदि हम मन लगाकर कार्य करें, तो यह सबसे संतोषजनक और प्रेरणादायक पेशा है।

अनिवेश डुंगडुंग

सूक्ष्म शिक्षण का अनुभव

मेरे महाविद्यालय में 18 अगस्त 2025 से सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना का अभ्यास आरंभ हुआ। इसकी शुरुआत छोटे समूहों में हुई, जिन्हें *मेंटॉर ग्रुप* कहा जाता है। शुरू-शुरू में, भले ही मेरी सहेलियाँ मेरे साथ थीं, फिर भी मुझे इस *मेंटॉर ग्रुप* में अच्छा नहीं लगता था। जब भी मुझे समूह के सामने अपने शिक्षण कौशल का प्रदर्शन करना होता, मैं बहुत डर और झिझक महसूस करती थी। मुझे तो यह भी लगता था कि मेरे भीतर आत्मविश्वास बिल्कुल नहीं है और न ही मैं किसी को पढ़ा या समझा सकती हूँ।

शुरुआत में न तो मैं ठीक से श्यामपट्ट (ब्लैकबोर्ड) पर लिख पाती थी और न ही स्पष्ट रूप से बोल पाती थी। बोलते समय मेरा गला कांप उठता और डर के कारण मेरी धड़कनें तेज हो जाती थीं। उस समय मैं खुद को समझाकर कहती – *"हिम्मत रख असियन, थोड़ी देर और, बस थोड़ी देर सबके सामने खड़ी रह। All is well"* इस तरह खुद को संभालने की कोशिश करती रही। धीरे-धीरे, लगातार प्रयास और बार-बार मंच पर जाने से मुझमें आत्मविश्वास आने लगा। इस दौरान मेरे *मेंटॉर* और *मेंटॉर ग्रुप* के अन्य सदस्यों ने मेरी खूबियों और कमियों की ओर सकारात्मक ढंग से ध्यान दिलाया। उनकी सूचनाओं और मार्गदर्शन ने मुझे अपनी कमजोरियों को सुधारने और अपने शिक्षण को सही दिशा देने में बहुत मदद की।

अब जब भी मैं किसी सभा या समूह के सामने खड़ी होती हूँ, तो निडर होकर अपनी बातें सहजता से रख पाती हूँ। अब मुझे अपने *मेंटॉर ग्रुप* में भी बहुत अच्छा लगता है। इस पूरे अनुभव ने मुझे समझा दिया कि मेहनत और अभ्यास से कोई भी डर खत्म किया जा सकता है और आत्मविश्वास हासिल किया जा सकता है। इसलिए कहा जाता है— ***"कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।"***

असियन एक्का
प्रथम वर्ष 'A'

धान कटनी का अनुभव

भारत कृषि प्रधान देश है और यहाँ के किसान हमारे वास्तविक पालनहार हैं। वे प्रतिदिन कठिन परिश्रम करके हमारी थालियों तक भोजन का हर दाना पहुँचाते हैं। इसी भावना को समझने और एक-एक अन्न के महत्व को जानने के उद्देश्य से **PTEC महाविद्यालय** द्वारा प्रशिक्षाणार्थियों को धान रोपाई तथा कटनी का अनुभव कराया गया। 14 नवंबर 2025 को हुई **धान कटनी गतिविधि** हमारे लिए बेहद यादगार रही। सभी प्रशिक्षाणार्थियों ने दल बनाकर उत्साह, सहयोग और टीम–वर्क के साथ धान काटने का कार्य किया। काम करते हुए हँसी-मजाक, गीतों की धुन और साथियों का सहयोग—इन सबने माहौल को और भी आनंदमय बना दिया।

किसानों के कठिन परिश्रम को अनुभव करते हुए हमें यह समझ में आया कि भोजन का हर दाना अनमोल है और उसका सम्मान करना हमारी जिम्मेदारी है। यह अनुभव न केवल ज्ञानवर्धक था, बल्कि हमें जीवन के मूल्यों से भी जोड़ गया।

तनवी केरकेटटा
द्वितीय वर्ष 'अ'

धान कटनी का अनुभव

हमारे महाविद्यालय में 14-11-2025 को धान कटनी का आयोजन किया गया। इस गतिविधि में सभी प्रशिक्षणार्थियों को अलग-अलग समूहों में बाँटा गया और प्रत्येक समूह को धान काटने का कार्य दिया गया। हमारे समूह ने मिलकर बहुत उत्साह और सहयोग के साथ धान की कटनी की। समूह में काम करते हुए हमें बहुत मज़ा आया और सभी ने पूरी जिम्मेदारी से अपना योगदान दिया। जिस चावल को हम रोज़ भोजन के रूप में खाते हैं, उसे स्वयं काटने का अनुभव मेरे लिए नया और सीखने योग्य रहा। यह करके महसूस हुआ कि अन्न का हर दाना कितनी मेहनत से तैयार होता है। कीचड़ भरे खेतों में उतरकर काम करना आसान नहीं था, लेकिन इसे करते हुए हमें किसानों की कठिनाइयों का वास्तविक अनुभव मिला।

काम करते समय हम सभी ने मिलकर गीत भी गाए, हँसी-मजाक किया और देखते-ही-देखते काम पूरा हो गया—यह पता ही नहीं चला कि समय कब बीत गया। समूह के साथ किया गया यह अनुभव मेरे लिए बहुत यादगार रहा और इससे मैंने अन्न के महत्व और मेहनत के मूल्य को गहराई से समझा।

सुप्रिया मिंज
द्वितीय वर्ष 'अ'

धान कटाई का अनुभव

सामूहिक रूप से किसी भी कार्य को करना यह दर्शाता है कि हम एक-दूसरे के प्रति कितनी सहयोग की भावना रखते हैं। हमारे शिक्षण महाविद्यालय में धान कटाई का जो अनुभव मिला, वह केवल एक कार्य नहीं था, बल्कि एक प्रकार का जीवन–पाठ था। धान काटते समय यह महसूस हुआ कि खेत से अन्न को तैयार होकर हमारे थालियों तक आने में कितनी मेहनत लगती है। कीचड़ भरे खेत, धूप, थकावट—इन सबके बीच काम करना आसान नहीं था, फिर भी हमने कार्य को पूरा किया। खलिहान में धान पहुँचाने तक का हर चरण हमें कठिन मेहनत का महत्व सिखाता रहा। हालाँकि काम थकान भरा था, लेकिन इस अनुभव ने मुझे यह समझाया कि जीवन में चुनौतियाँ आएँ तो हमें डरना नहीं चाहिए। थकावट और कठिनाइयों के बीच भी आगे बढ़ते रहना ही असली संघर्ष है। इस सामूहिक गतिविधि ने यह भी सिखाया कि कोई भी काम असंभव नहीं होता, बशर्ते हम एकता, सहयोग और आपसी भरोसे के साथ काम करें। सच कहें तो ***एकता में ही बल है***—यह बात इस अनुभव ने और भी गहराई से समझा दी।

डिबर संडी पुर्ती
प्रथम वर्ष 'अ'

हार्दिक-विदाई

खुशी, आभार और थोड़ा भावुकता लिए आज का यह दिन,
मैम उषा आपके लिए समर्पित हो ।

आपका PTEC परिवार में शामिल होना, हम सभी के लिए एक मार्गदर्शक, एक प्रेरक और एक मित्र की भांति रहा। आपने दिनांक 06-01-2025 को सामाजिक विज्ञान शिक्षिका के रूप में पदार्पण किया। दस महीने की आपकी उपस्थिति, आपकी हर मुस्कान, हर सीख हम सभी के दिलों में अमिट रहेगी।

आपकी सरल वाणी और विद्यार्थियों के प्रति आपका समर्पण हम सभी को प्रेरित करता रहेगा। आपके मार्गदर्शन और प्रेम के लिए हृदय से धन्यवाद। हम आपके उज्जवल भविष्य और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

आज जब आप आगे बढ़ रहे हैं,
हमारे दिल में बस यही दुआ है,
आप जहाँ भी रहें, मुस्कुराते रहें,
लोगों में जीवन की रोशनी बांटते रहें।

हार्दिक स्वागत

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में वर्ष 2025 में दो नए व्याख्याताओं— **श्री विनय एक्का** एवं **सुश्री संजू रंजना होरो** —का आगमन हमारे लिए अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है। महाविद्यालय परिवार ने उनका हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें अपने शैक्षिक समुदाय का अभिन्न अंग बनाया। प्रातःकालीन सभा में विद्यार्थियों एवं समस्त प्राध्यापक-कर्मचारियों ने पुष्पगुच्छ एवं तालियों की गूंज के साथ उनका आत्मीय अभिनंदन किया।

उनके आगमन से संस्थान के वातावरण में नई ऊर्जा, नवीन विचारधारा और शैक्षिक उत्साह का संचार हुआ है। श्री विनय एक्का दो महत्वपूर्ण विषयों— **'नवोदित भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक'** तथा **'विद्यालय संगठन, निर्देशन एवं परामर्श'** —का अध्यापन करेंगे। इन विषयों पर उनका गहन अध्ययन, शोधपरक दृष्टिकोण तथा समृद्ध व्यवहारिक अनुभव निश्चय ही प्रशिक्षणार्थियों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। हमें विश्वास है कि उनके मार्गदर्शन में विद्यार्थी न केवल विषयवस्तु का गहरा ज्ञान अर्जित करेंगे, बल्कि एक आदर्श शिक्षक के रूप में आवश्यक संवेदनशीलता, नेतृत्व क्षमता एवं पेशेवर दक्षता भी विकसित करेंगे।

इसी प्रकार, सुश्री संजू रंजना होरो महाविद्यालय में **सामाजिक विज्ञान** विषय का अध्यापन करेंगी। सामाजिक विज्ञान के माध्यम से वे विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना, मानवीय मूल्यों, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण तथा समसामयिक विषयों के प्रति जागरूकता का विकास करेंगी। उनका उत्साह, समर्पण और शिक्षण कौशल प्रशिक्षणार्थियों को एक व्यापक एवं मानवीय दृष्टि प्रदान करेगा।

महाविद्यालय परिवार उनकी उपस्थिति को एक नए अध्याय की सशक्त शुरुआत मानता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि दोनों व्याख्याताओं के मार्गदर्शन में हमारा संस्थान शैक्षिक उत्कृष्टता की ओर निरंतर अग्रसर रहेगा और प्रशिक्षु शिक्षक अपने दायित्वों का निर्वहन अधिक दक्षता एवं प्रतिबद्धता के साथ कर सकेंगे।

STUDENT REPRESENTATIVES

Academic & Cultural Representatives

Jaylas Kerketta
Anand Tirkey
Alisa Tirkey
Prisma Toppo

Agriculture & Cleaning Representatives

Rajat Bage
Asit Lakra
Anima Toppo
Anisha Ekka

Liturgy & Prayer Representatives

Anish Kerketta
Ujjwal Toppo
Anamika Kullu
Krusita Tirkey

Health & Hygiene Representatives

Robin Kindo
Jemmy Ekka
Sunita Lugun
Alka Kandulna

Games & Sports Representatives

Marshal Tudu
Ernest Bhengra
Tanwi Kerketta
Priti Kerketta

Notice Board Representatives

Sachin Marandi
Sanjay Aind
Leema Tirkey
Muskan Lakra

Flower Garden Representatives

Sigin Munda
Akash Ekka

Electricity Representatives

Akash Tirkey
Anish Kumar Paswan

परीक्षा परिणाम

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, गुड़ुवा, सीतागढ़, हजारीबाग
सत्र 2023-25 का डी.एल.एड. (D. El. Ed.) वार्षिक परीक्षा परिणाम

महाविद्यालय अत्यंत हर्षित और गौरवान्वित है कि सत्र 2023-25 का डी. एल. एड. वार्षिक परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत (100%) रहा है और हमारे सभी 107 प्रशिक्षणार्थियों ने उत्कृष्ट श्रेणी (Distinction) में सफलता प्राप्त की है। यह उपलब्धि न केवल प्रशिक्षणार्थियों की मेहनत और लगन का परिणाम है बल्कि हमारे व्याख्याताओं के समर्पित मार्गदर्शन, नियमित शिक्षण-प्रशिक्षण तथा महाविद्यालय प्रबंधन के कुशल संचालन का भी प्रतिफल है।

महाविद्यालय में प्रथम स्थान पर सुश्री अंजु सुरीन 88.50 प्रतिशत, द्वितीय स्थान पर सुश्री अंजली मारंडी 87.57 प्रतिशत और तृतीय स्थान पर सुश्री सोनाली एक्का 86.79 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

व्याख्यातगण इस सफलता के वास्तविक स्तंभ हैं जिन्होंने प्रतिबद्धता और धैर्य के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की। साथ ही, महाविद्यालय प्रबंधन को भी इस उल्लेखनीय सफलता के लिए धन्यवाद, जिनके बेहतर नेतृत्व और सकारात्मक वातावरण ने प्रशिक्षणार्थियों को सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया।

हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई!

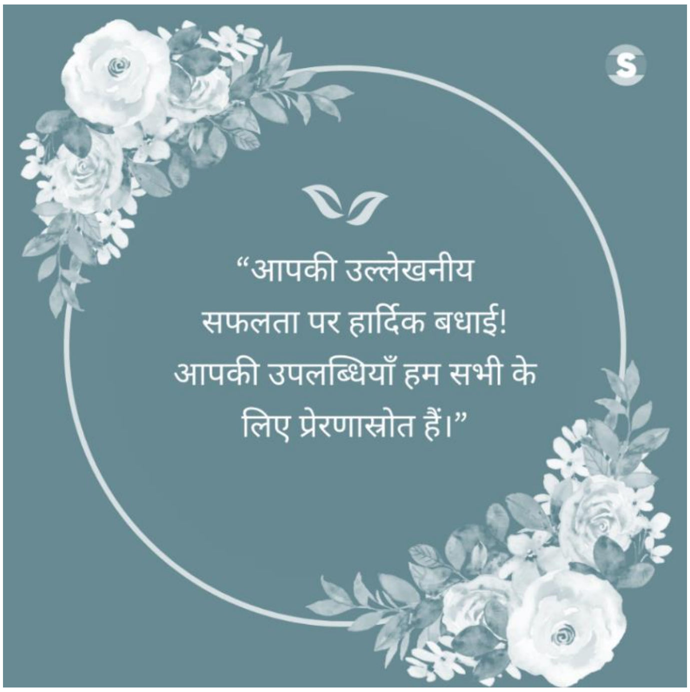

Ms. Anju Surin (88.50%)

Ms. Anjali Marandi (87.57%)

Ms. Sonali Ekka (86.79%)

उत्कृष्ठ उपलब्धि (नृत्य प्रतियोगिता)

मैं, प्रिंस कुजूर, अपने नृत्य प्रदर्शन के बारे में अपने अदभुत अनुभव को साझा करने में बहुत खुश हूँ, जिसमें मैंने "झंकार" अखिल भारतीय राष्ट्रीय नृत्य, संगीत महोत्सव और प्रतियोगिता सीजन 10 में भाग लिया था। जो 29 नवंबर 2025 को " लोक कला मंच" नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। महोत्सव का आयोजन डॉ शगुफ्ता खान ने किया था। मैंने भरतनाट्यम नृत्य शैली में ओपन आयु वर्ग के 'स्लॉट में भाग लिया था। मैंने ओपन श्रेणी के स्लॉट में प्रथम स्थान जीता और मुझे नृत्य गुरु भी वीणा मैम (कथक नृत्यांगना) द्वारा प्रमाण पत्र और ट्रॉफी के रूप में ढेर सारे आशीर्वाद और प्यार से सम्मानित किया गया। संगीत के जज गुरु श्री रजनीश सर (तबला वादक) द्वारा भी बहुत सराहना मिली और वहाँ मौजूद अन्य कलाकारों ने भी सराहना की। यह कार्यक्रम सरकार के माध्यम से पंजीकृत था जो कि नीति आयोग है।

मैंने अपने प्रस्तुति द्वारा दर्शकों के मन-दिल को आकर्षित कर सका क्योंकि मुझे ऐसा लगा कि जीवन में अपने कला के प्रति त्याग, तपस्या और साधना मुझे बड़े गुरुजनों एवं बड़े कलाकारों के समक्ष उत्कृष्ट प्रस्तुति देने में सक्षम रहा। गुरुजनों एवं बड़े कलाकारों का व्यवहार एवं प्रस्तुति मुझे बहुत प्रभावित किया। उनका नृत्य के प्रति समर्पण उनके नृत्य पर झलक रहे थे। मुझे बहुत खुशी एवं गर्व महसूस हो रहा है कि मेरे प्रस्तुति को देखकर अन्य कलाकार भी प्रभावित हुए और गुरुजनों के द्वारा जीवन में बहुत आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

युवा पीढ़ी की भूमिका : झारखण्ड के विकास में

प्रथम
निधि खलखो

रूपरेखा-
1. प्रस्तावना
2. युवाओं का योगदान
3. विकास में युवाओं की चुनौतियाँ
4. युवाओं की समस्याओं का सामाधान
5. निष्कर्ष

झारखण्ड राज्य भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित राज्य है। झारखण्ड राज्य 15 नवंबर 2000 ई. को बिहार राज्य से अलग होकर एक स्वतंत्र राज्य बना। झारखण्ड में उरॉव, खड़िया, हो, मुंडा आदि जाति, धर्म के लोग रहते हैं। झारखण्ड राज्य सुंदर तथा प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न राज्य है। जिस कारण से यह उद्योगों के प्रमुख केन्द्रों के रूप में उभर रहा है। झारखण्ड के विकास में हमारे देश के युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। युवा ही किसी राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जा सकते हैं। युवा यदि चरित्रवान हो तो समाज भी उनका अनुसरण कर चरित्रवान बनेगा और समाज तथा राज्य को विकास के पथ में आगे बढ़ाएगा।

युवा समाज का मविष्य है।"

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में उस समाज, राज्य तथा देश में रहने वाले लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। युवा ही राज्य के निर्माता और पथ प्रदर्शक होते है। आज यदि हम कहें तो युवा विभिन्न क्षेत्रों में अपना नाम कमा रहा है। युवा वर्ग झारखण्ड के विकास के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहें हैं। युवा यदि शिक्षित है तो उस देश, राष्ट्र तथा समाज की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हो रहा है। वे दूसरों को भी शिक्षा दिलाने का प्रयास कर रहें हैं। यदि हम खेल जगत में झांक का देखें, तो सलीमा टेटे और दीपिका कुमारी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जगत में अपने तथा हमारे राज्य झारखण्ड का नाम रौशन कर रही हैं तथा दूसरे यवाओं को खेल जगत में आगे लाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। आज युवा वर्ग राजनीतिक पदों में भी अपना नाम दर्ज कराकर समाज की समस्याओं के समाधान के लिए आवाज उठा रहें हैं। सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी युवा वर्ग अपनी भूमिका निभा रहें हैं। वे झारखण्ड के रीति-रिवाजों को याद रखने तथा संरक्षित करने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहें हैं, जिससे हमारे झारखण्ड राज्य की संस्कृति को दूसरे राज्य देखें और प्रभावित हो सकें। आज तकनीकी क्षेत्रों में भी झारखण्ड का युवा अपना प्रदर्शन कर रहें हैं। वे अपनी कला-संस्कृति से अपना रोजगार प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन रहें हैं।

जिससे समाज विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। वर्तमान में युवाओं के कार्यों में अनेक समस्याएँ मुँह मोड़कर खड़ी हुई है। जिसमें प्रमुख समस्याएँ बेरोजगारी, कौशल आधारित प्रशिक्षणों की कमी, पलायन की समस्या आदि शामिल हैं। इसके अलावा प्राकृतिक सम्पदाओं का खनन, भ्रष्टाचार आदि झारखण्ड राज्य के विकास में बाधा डाल रही है। हमारे समाज में युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पा रही है। जिस कारण युवा वर्ग शिक्षित होने के कारण भी बेरोजगार है। बिजली की समस्या और विभिन्न तकनीकी कौशलों की कमी के कारण युवा वर्ग बेरोजगार है। झारखण्ड राज्य में खनिज-सम्पदाओं का इतना अधिक खनन हो रहा है तथा दूसरे राज्य की कंपनियों को हस्तांतरित होने के कारण युवा वर्ग दूसरे राज्य तथा विदेशों में जा रहे हैं। इन सभी कारणों से युवाओं को अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और झारखण्ड राज्य के विकास में युवाओं को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सरकारी नौकरियों में वृद्धि, कौशल-आधारित प्रशिक्षण की आवश्यकता है। राज्य के विकास के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं तथा क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान किया जाय, ताकि समाज तथा राज्य शिक्षित हो सके। वर्तमान समय में बेरोजगारी को समाप्त करना अति आवश्यक है। इसके लिए सरकार को अधिक से पदों पर नियुक्ति करनी चाहिए। जिससे समाज के लोग बेरोजगार न रहे और उन्हें रोजगार प्राप्त हो, जिससे वे परिवार का पालन-पोषण अच्छी तरह कर सकें, जिससे समाज, राज्य तथा राष्ट्र शिक्षित एवं सभ्य बन सके। हमारे देश की संस्कृति ही हमारी पहचान है। हमारे राज्य की संस्कृति को हमें सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर जैसे- सांस्कृतिक वेशभूषा प्रतियोगिता का आयोजन कर हम हमारे संस्कृति को दूसरे के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं तथा अपनी संस्कृति को भविष्य के लिए संरक्षित कर सकते हैं। यहाँ के युवाओं को अपने राज्य की समस्याओं का समाधान करने तथा आवाज उठाने के लिए राजनीति में नाम दर्ज कराने की आवश्यकता है।

युवा राष्ट्र के निर्माता तथा सामाजिक परिवर्तन के वाहक होते हैं। यदि हमारे राज्य के युवा शिक्षित हो, क्रियाशील हो तो वे समाज को बदल सकते हैं। युवा शक्ति राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है, यदि युवा बदलेगा तो समाज बदलेगा, समाज बदलेगा तो राज्य का विकास होगा।

निबंध प्रतियोगिता (प्रथम वर्ष)

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा और पर्यावरण संरक्षण

द्वितीय
नितेश यादव

झारखण्ड भारत के पूर्वी भाग में स्थित एक ऐसा राज्य है जिसमें प्रकृति, सौन्दर्य, खनिज-सम्पदा, घने जंगल और विविध जैव विविधता है जिसके कारण इसे "वनों की भूमि" कहा जाता है। यहाँ की प्राकृतिक धरोहर न केवल राज्य की आर्थिक रीढ़ है, बल्कि इसकी संस्कृति है।।

झारखण्ड भारत का वह राज्य है जिसे प्रकृति ने उदारता से नवाजा है। घने जंगल, खनिजों से भरा, भू-स्तर बहती नदियाँ, झरने और विविध जैव सम्पदा इसे देश के सबसे समृद्ध क्षेत्रों में शामिल करते हैं। यहाँ की प्राकृतिक सम्पदा न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था का आधार है, बल्कि आदिवासी समुदायों की संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली का भी महत्वपूर्ण अंग है।

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा

1. वन सम्पदा:- झारखण्ड का लगभग एक तिहाई क्षेत्र घने वनों से आच्छादित है। साल, सागवान, महुआ, शीशम, कुसुम और करंज जैसे वृक्ष यहाँ के जंगलों की पहचान है। ये वन यहाँ के लोगों के ईंधन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
2. खनिज सम्पदा:- झारखण्ड को भारत का खनिज भंडार कहा जाता है। यहाँ कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइड, मैगनीज, अभ्रक तथा यूरेनियम महत्वपूर्ण खनिजों की भरपूर उपलब्धता है। खनन उद्योग राज्य की औद्योगिक और आर्थिक प्रगति में केंद्रीय भूमिका निभाता है।
3. दामोदर, स्वर्ण रेखा, बराकर और कोयल जैसी नदियाँ राज्य की जीवन-रेखा है। इनके किनारे स्थित झरने पर्यटक को आकर्षित करते हैं।
4. जैव-विविधता:- बेतला राष्ट्रीय उद्यान और पलामू टाइगर रिजर्व जैसे संरक्षित क्षेत्र हाथी, बाघ, हिरण, भालू, तेंदुआ समेत अनेक अन्य प्रजातियों का घर है। यहाँ अनेक दुर्लभ पक्षी और औषधीय पौधे भी पाये जाते हैं।

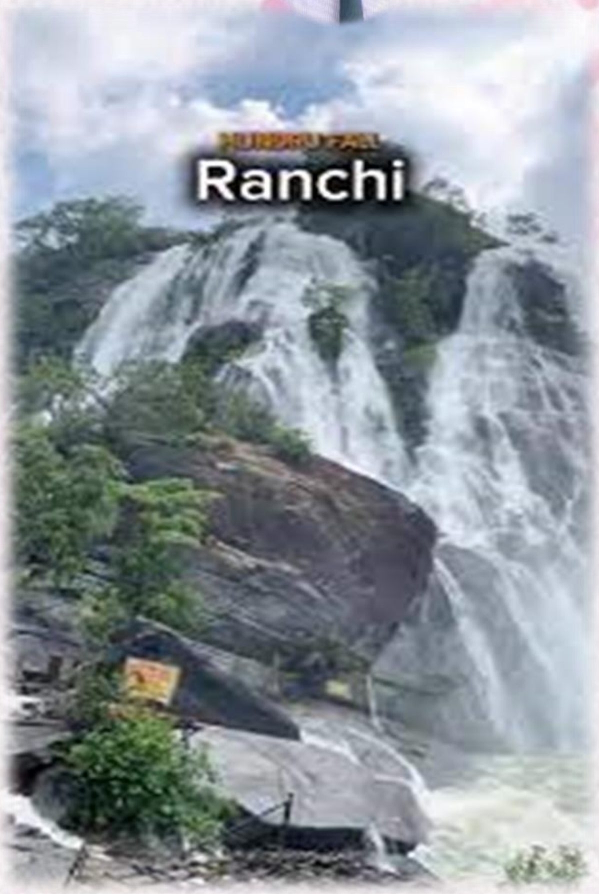

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

खनन, औद्योगिक विकास और वनों की कटाई के कारण पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और भूमि प्रदूषण जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय

1. अत्यधिक मात्रा में पेड़ एवं वृक्ष रोपण प्रक्रिया में बढ़ोतरी करना।
2. अत्यधिक मात्रा में बाँध निर्माण प्रक्रिया।
3. ग्रामीण इलाकों में अत्यधिक मात्रा में कृषि एवं मेढ़बन्दी प्रक्रिया।
4. सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा की प्रक्रिया में बढ़ावा।
5. लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करना।

निबंध प्रतियोगिता (द्वितीय वर्ष)

युवा पीढ़ी की भूमिका झारखंड के विकास में

प्रथम
अनुजा नेहा पन्ना

युवा है उगते सूरज जैसे,जग में रोशनी हैं फैलाते जाते, जब हिम्मत से हैं कदम बढ़ाते,तो इतिहास भी हैं वे ही बनाते।

झारखण्ड के युवा और राज्य का विकास

परिचय

युवा पीढ़ी किसी भी राज्य की सबसे बड़ी ताकत होती है। झारखण्ड राज्य का भविष्य भी इन्हीं युवाओं के हाथों में सुरक्षित है, जो अपने सक्रिय योगदान से राज्य के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। झारखण्ड की आबादी का एक बड़ा हिस्सा युवाओं से बना है, जिनमें ऊर्जा, उत्साह, जज़्बा और परिश्रम की अद्भुत क्षमता भरी हुई है। यही युवा राज्य के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक विकास की "रीढ़ की हड्डी" है, जो अथक परिश्रम और समर्पण के साथ आगे बढ़ते हुए सभी को साथ लेकर विकास के मार्ग पर आगे ले जाता है।

झारखण्ड के युवा और विकास

झारखण्ड के युवा आधुनिक सोच, अनुशासन, परिश्रम और कौशल के बल पर राज्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इन युवाओं में लक्ष्य के प्रति समर्पण और प्रगतिशील सोच दिखाई देती है। यही कारण है कि आज झारखण्ड अनेक क्षेत्रों में निरंतर उन्नति कर रहा है।

1) आधुनिक शिक्षा एवं कौशल के माध्यम से विकास

आज के युवा केवल पारंपरिक शिक्षा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक ज्ञान और नए कौशल सीखकर राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। तकनीकी शिक्षा, कंप्यूटर एवं डिजिटल कौशल, व्यावसायिक प्रशिक्षण इन सभी क्षेत्रों में झारखण्ड के युवा पूरे देश में अपनी पहचान बना रहे हैं।

2) रोजगार एवं उद्यमिता द्वारा विकास

झारखण्ड के युवा केवल नौकरी खोजने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले बन रहे हैं। वे छोटे उद्योग, हस्तशिल्प, कृषि आधारित कार्य, हैंडीक्राफ्ट, व्यापार एवं स्टार्टअप जैसे क्षेत्रों में नए अवसर पैदा कर रहे हैं। इससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रोजगार बढ़ रहा है। युवा स्वयं सक्षम बन रहे हैं और समाज के पिछड़े वर्गों को भी साथ लेकर चल रहे हैं।

3) संस्कृति एवं खेल में योगदान

झारखण्ड की समृद्ध संस्कृति राज्य की शान है, और इसके संरक्षण में युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे हैं:-पारंपरिक पहनावा, लोकगीत, लोकनृत्य, त्योहार एवं रीतिरिवाज को पूरे गर्व से आगे बढ़ाते हैं।

खेल के क्षेत्र में भी झारखण्ड के युवाओं ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राज्य का नाम रोशन किया है। प्रमुख उदाहरण—महेन्द्र सिंह धोनी, दीपिका कुमारी, सलीमा टेटे। इन खिलाड़ियों ने अपनी मेहनत और समर्पण से पूरे देश में झारखण्ड की पहचान को मजबूत किया है

4) सामाजिक जागरूकता में भूमिका

झारखण्ड के युवा समाज में फैली कुरीतियों जैसे—बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, अंधविश्वास के खिलाफ लोगों को जागरूक कर रहे हैं। उनकी यह पहल राज्य के सामाजिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

5) पर्यावरण संरक्षण में योगदान

झारखण्ड की समृद्धि उसके जंगलों, नदियों और प्राकृतिक संपदाओं से जुड़ी है। युवा पर्यावरण संरक्षण के लिए—

- वृक्षारोपण
- स्वच्छता अभियान
- पानी बचाओ अभियान

  जैसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं, जिससे राज्य के सतत विकास को बढ़ावा मिल रहा है।

समापन

झारखण्ड की धरती अपने युवाओं को पुकारती है—
"आगे बढ़ो, मेहनत करो, ज्ञान अपनाओ और अपनी ऊर्जा से राज्य का भविष्य उज्ज्वल बनाओ।"

वास्तव में, झारखण्ड की युवा पीढ़ी ही राज्य की सबसे बड़ी शक्ति है। यदि सभी युवा एकजुट होकर आगे बढ़ें, तो वे राज्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर एक समृद्ध और शक्तिशाली झारखण्ड का निर्माण कर सकते हैं।

निबंध प्रतियोगिता (द्वितीय वर्ष)

द्वितीय

वतिस्ता यादव

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा और पर्यावरण संरक्षण

भूमिका

झारखण्ड अपनी समृद्ध प्राकृतिक सम्पदा और हरियाली के कारण 'वन प्रदेश' तथा 'झारखण्ड' (जंगल और झाड़ियों की भूमि) के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ के मनमोहक झरने, घने जंगल, विशाल जलाशय, विविध खनिज और दुर्लभ वन्यप्राणी इस राज्य को अद्वितीय बनाते हैं। प्राकृतिक वातावरण ही वह आधार है जिससे हम शुद्ध हवा, स्वच्छ पानी, भोजन और जीवन के लिए आवश्यक संसाधन प्राप्त करते हैं। यह प्रकृति का अमूल्य उपहार है, जिसके संरक्षण की जिम्मेदारी प्रत्येक नागरिक की है।

आज पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी नारा नहीं, बल्कि वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक **नैतिक कर्तव्य** बन चुका है। प्राकृतिक सम्पदा और पर्यावरण संरक्षण हमारे वर्तमान जीवन और भविष्य दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

प्राकृतिक सम्पदा और पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा का हमारे जीवन में अनोखा महत्व है—

- हमें शुद्ध हवा, स्वच्छ जल और सुरक्षित पर्यावरण उपलब्ध कराती है।
- यहाँ की खनिज सम्पदा—कोयला, लोहा, तांबा, अभ्रक आदि—देश के उद्योगों और ऊर्जा उत्पादन में अत्यंत उपयोगी है।
- प्राकृतिक संसाधनों के कारण रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे राज्य और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।
- जंगल, पहाड़, जलवायु और महासागर जैसे तत्व पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हैं, जो सभी जीवों के स्वास्थ्य और अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इस प्रकार, झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा राज्य की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का मूल आधार है।

संरक्षण के उपाय

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण समय की बड़ी आवश्यकता है। यदि आज हमने इनका ध्यान नहीं रखा, तो आने वाली पीढ़ियों का जीवन कठिन हो जाएगा। संरक्षण के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं—

1. वृक्षारोपण

अधिक से अधिक पेड़ लगाना पर्यावरण संरक्षण का सबसे सरल और प्रभावी उपाय है। पेड़ 'प्रकृति के फेफड़े' हैं, जो हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और जलवायु संतुलन बनाए रखते हैं।

2. वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग

जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम कर सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल विद्युत जैसे **नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों** का उपयोग बढ़ाना आवश्यक है।

3. प्लास्टिक का बहिष्कार

एक बार उपयोग होने वाले डिस्पोजेबल प्लास्टिक का उपयोग रोकना चाहिए। इसके स्थान पर **जूट, कागज़ और कपड़े के थैले** अपनाना पर्यावरण संरक्षण में बड़ा कदम है।

4. बचत और पुनर्चक्रण

पानी, बिजली और कागज़ की बचत करना तथा कचरे का **रीसाइकल और रीयूज़** करना प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करता है।

5. जन जागरूकता

हर नागरिक को अपने कर्तव्य समझते हुए प्रकृति के अनुकूल जीवनशैली अपनानी चाहिए। जागरूकता कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान और सामुदायिक प्रयास पर्यावरण संरक्षण को मजबूत बनाते हैं।

प्रमुख नारे

"जल, जंगल, जमीन हमारी जान — झारखण्ड की सम्पदा है महान।"
"वन बचाओ, जीवन बचाओ — झारखण्ड को हरा-भरा बनाओ।"
"पेड़ लगाओ, धरती बचाओ — झारखण्ड की शान बढ़ाओ।"

निष्कर्ष

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा इसकी सबसे बड़ी शक्ति है। ये संसाधन राज्य के आर्थिक विकास की रीढ़ हैं और लोगों की सांस्कृतिक व सामाजिक पहचान से गहराई से जुड़े हैं। हालांकि, इन संसाधनों का अत्यधिक दोहन चिंता का विषय है। केवल सतत विकास, प्रभावी नीतियों और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ही हम अपनी प्राकृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

प्राकृतिक सम्पदा पृथ्वी का अनमोल उपहार है—इसे सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य भी है और जिम्मेदारी भी।

पोप लियो XIV (रॉबर्ट फ्रांसिस प्रीवोस्ट; जन्म 14 सितंबर, 1955) कैथोलिक गिरजाघर के पोप और वैटिकन सिटी के प्रमुख हैं। पोप फ्रांसिस की मृत्यु के बाद 8 मई 2025 को 2025 पोप सम्मेलन के दौरान उनका चुनाव किया गया।

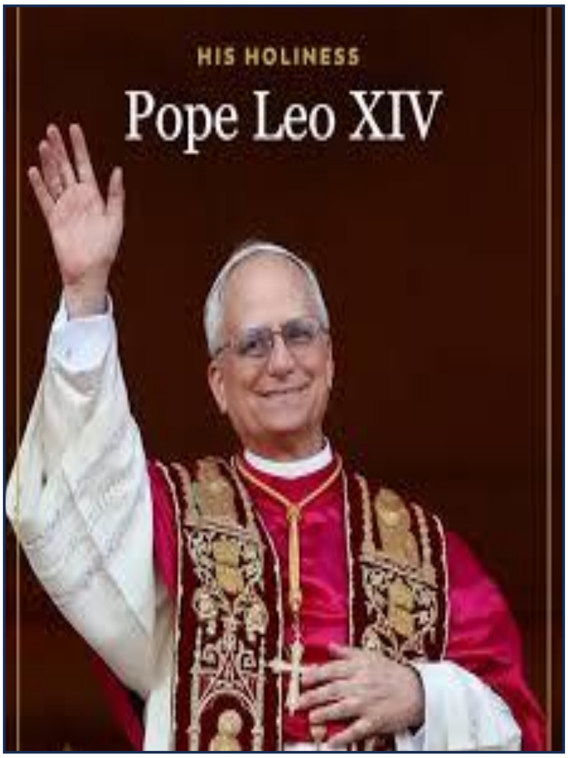

शिकागो, इलिनोइस में जन्मे प्रीवोस्ट ने अपना प्रारंभिक पादरी जीवन, ऑर्डर ऑफ सेंट ऑगस्टीन को समर्पित किया। रॉबर्ट ने अपना पूरा जीवन पेरू में सेवा करते हुए बिताया है। उनकी सेवा में 1985 से 1986 और 1988 से 1998 तक पेरू में व्यापक कार्य शामिल था, जहां उन्होंने पैरिश पादरी, डायोसेसन अधिकारी, सेमिनरी शिक्षक और प्रशासक के रूप में कार्य किया। 2001 से 2013 तक ऑर्डर ऑफ सेंट ऑगस्टीन के पूर्व जनरल चुने गए, बाद में वे चिक्लेयो के बिशप (2015-2023) के रूप में पेरू लौट आए। 2023 में, पोप फ्रांसिस ने उन्हें बिशपों के लिए डिकास्टरी का प्रीफेक्ट और लातिनी अमरीका के लिए पोंटिफिकल कमीशन का अध्यक्ष नियुक्त किया और उसी वर्ष उन्हें कार्डिनल बनाया। इन भूमिकाओं ने पोप उम्मीदवार के रूप में उनकी प्रमुखता को बढ़ाया।

लियो १४ के पास अमेरिका और पेरू की दोहरी नागरिक है, इस प्रकार वे अमेरिका और पेरू के पहले पोप बने हैं। वह ऑर्डर ऑफ सेंट ऑगस्टीन से पहले पोप हैं और रुल ऑफ सेंट ऑगस्टीन के नियम का पालन करने वाले ऑर्डर से सातवें हैं।

हेबेमुस पापम

हेबेमस पापम (शाब्दिक अर्थ 'हमारे पास एक पोप है') एक लैटिन वाक्यांश है जिसका उपयोग कैथोलिक चर्च के नए पोप के चुनाव की घोषणा में किया जाता है, जिसे पारंपरिक रूप से कार्डिनल्स कॉलेज के प्रोटोडेकॉन (कॉलेज में वरिष्ठ कार्डिनल डीकन) या पोप कॉन्क्लेव में भाग लेने वाले वरिष्ठ कार्डिनल डीकन द्वारा दिया जाता है।

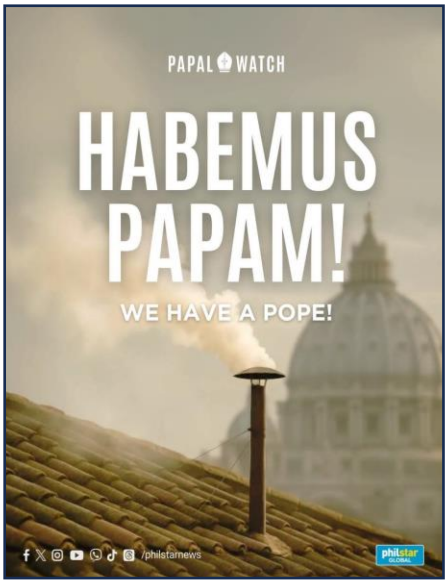

यह घोषणा वेटिकन में सेंट पीटर बेसिलिका की केंद्रीय बालकनी (लॉजिया) से की जाती है, जहाँ से सेंट पीटर स्क्वायर दिखाई देता है। घोषणा के बाद, नए पोप को लोगों के सामने पेश किया जाता है जहाँ वह अपना पहला उर्बी एट ओर्बी आशीर्वाद देते हैं।

सेंट ऑगस्टीन का नियम

लगभग 400 वर्ष में लिखा गया सेंट ऑगस्टीन का नियम, आठ अध्यायों में विभाजित एक संक्षिप्त दस्तावेज़ है और समुदाय में जीने वाले धार्मिक जीवन की रूपरेखा के रूप में कार्य करता है। यह पश्चिमी चर्च में सबसे पुराना मठवासी नियम है।

हिप्पो के ऑगस्टीन (354-430) द्वारा विकसित यह नियम शुद्धता, गरीबी, आज्ञाकारिता, दुनिया से अलगाव, श्रम का बंटवारा, हीनता, भाईचारे का दान, सामूहिक प्रार्थना, व्यक्ति की शक्ति के अनुपात में उपवास और संयम, बीमारों की देखभाल, मौन और भोजन के दौरान पढ़ना को नियंत्रित करता है। यह बारहवीं शताब्दी के बाद से व्यापक पैमाने पर उपयोग में आया और आज भी डोमिनिकन, सर्वाइट्स, मर्सिडेरियन, नॉरबर्टिन और ऑगस्टिनियन सहित कई आदेशों द्वारा नियोजित किया जाता है।

साभार

विकिपीडिया, नि:शुल्क विश्वकोष से

The Story of the Hazaribag Jesuit Mission

In May 1949, a letter from Fr. Janssens, the Jesuit Superior General, set in motion a chain of events that would shape the history of education and pastoral work in eastern India. He wrote to Fr. Kelly, the Jesuit Vice Provincial of Australia, suggesting that the Australian Vice Province could send men to assist in the Ranchi Mission. By July of that year, Fr. Kelly replied affirmatively, noting that his advisors had unanimously agreed to take up the challenge. This marked the beginning of a remarkable partnership between Australian Jesuits and the people of Jharkhand.

On 6 February 1951, the first six Jesuits sailed from Melbourne, arriving in Ranchi later that month to begin their Hindi studies. By July, they had purchased Balmoral, a large house on five acres of land in Hazaribag, intended for an English-medium school. John Moore was appointed principal, and by January 1952, St. Xavier's School opened its doors. The school began modestly, with 22 boarders and 15-day scholars, but by the end of the year had grown to 70 boarders and 30-day scholars. The early years were marked by rapid expansion, with additional land purchased and Hampton Court, a former private hotel, acquired to house classes.

The mission was not limited to education. In 1953, Fr. Lou Lachal became parish priest of Mahuadanr, serving the Oraons, while Fr. Kevin Grogan took charge of Hazaribag parish, ministering to the Munda, Oraons, and Santhals. Their work was challenging, with limited funds and occasional hostility, but they persevered. Catechists like Philip Xaxa and Mahabir played vital roles, often facing personal danger in their efforts to spread the faith. Meanwhile, Fr. Bert

Balding began his work in Mahuadanr, later becoming headmaster of St. Joseph's Middle School, while others like Fr. Len Forster and Fr. Ted O'Connor took up assignments in Samtoli and Rengarih.

By 1954, local vocations began to emerge. Gaudentius Kongari, who had tutored Australians in Hindi, entered the novitiate, becoming the first local Jesuit from Jharkhand. He would later rise to become Provincial. The following year, Camille Kujur from Mahuadanr joined the novitiate, marking the beginning of a steady stream of local vocations. Around the same time, Bhurkhunda parish was established, with Fr. Huyghe pioneering work among glass factory laborers. Land was purchased, and the parish slowly took root.

The Palamau mission also began to take shape, though with limited resources. Jesuits like Fr. Harrison, Fr. Wijnant, and Fr. Ignatius Xalxo worked in Daltonganj, Kanjia, and Chandwa, facing challenges of few Catholics and scarce funds. In Mahuadanr, St. Joseph's School expanded to Class 8, though attempts to upgrade it to high school were initially vetoed. Nevertheless, progress continued, with new churches, hostels, and dharm schools being established.

By 1956, the mission had achieved independence. Ranchi was raised to the status of a Jesuit Province, and Hazaribag became an independent region with its own Major Superior. St. Xavier's celebrated its first academic success when all four boys who sat for the Senior Cambridge exam passed. The same year, Holy Family Hospital was opened in Koderma, run by the Medical Mission Sisters, providing much-needed healthcare.

The late 1950s and early 1960s saw further expansion. New parishes were established in Bokaro Thermal, Bhurkhunda, and Maheshmunda. The Teachers Training Institute at Sitagarha was founded in 1958, beginning with just 15 trainees but quickly growing into a major institution. By 1962, Fr. Ted O'Connor had become Principal, and

Gaudentius Kongari served as a regent there. The Institute emphasized moral education, with leaders like Fr. John Moore personally teaching moral science to instill values of charity and compassion.

Education remained central to the mission. In Mahuadanr, persistent lobbying by Fr. Ken McNamara eventually led to government recognition of St. Joseph's High School in 1966, securing funding for teachers and stipends for tribal students. That same year, Bokaro Steel Company invited the Jesuits to start an English-medium school. Under Fr. John Moore, classes began with 54 children in a ramshackle building. Remarkably, it was co-educational—the first Jesuit school in India, and possibly worldwide, to admit both boys and girls.

The mission also responded to crises. In 1967, a severe famine struck Palamau district. Relief operations were coordinated by Fr. Michael Windey, with support from Archbishop James Knox and Mother Teresa. Nuns from across India assisted in distributing rations, highlighting the Jesuits' commitment to social service. Around this time, Fr. Hans Hendriks began serious work among the Santhals, studying their language and customs, laying the foundation for future evangelization.

By the late 1960s and early 1970s, the mission had grown into a complex network of schools, parishes, and social initiatives. In 1968, the government's Kothari Commission recommended school complexes, and Mahuadanr became a model with linked high schools and shared facilities. Misereor, a German funding agency, supported construction projects, enabling the building of classrooms, hostels, and laboratories. In 1970, the Santhal mission bore fruit when sixteen families in Chenaro village were baptized, marking the beginning of a new apostolate.

The establishment of the Diocese of Daltonganj in 1971 was another milestone. Fr. George Saupin was appointed the first Bishop, consecrated in Ranchi, and began his ministry with a Mass at Dhori Mata Shrine. The diocese expanded rapidly, with new schools, parishes, and outreach programs. Meanwhile, the Bhurkhunda parish struggled, with the Maria Rehabilitation Centre closing in 1971 despite earlier efforts to provide artificial limbs and rehabilitation services.

Throughout the 1970s, the mission emphasized renewal and adaptation. Priests began living in villagers' homes, involving local leaders in decision-making, and integrating traditional dances into Catholic life. New parishes were established at Gothgaon and Sale, while famine relief continued in Palamau. Brothers also played crucial roles, serving as builders, educators, and administrators. Fr. Paul Jackson pursued Islamic studies, earning a Ph.D. on Sufi writings and becoming known as the "Catholic Sufi saint."

By the 1980s, the mission had matured. St. Robert's School gained government recognition, and St. Xavier's Bokaro continued to grow. The Bhuiya apostolate began in Tilwa village, with baptisms and simple schools. Chiro parish was established in 1982, and Mandair parish followed soon after. Education expanded further when St. Joseph's High School in Mahuadanr was granted +2 status, a major step for the Chechari valley.

Leadership also transitioned. In 1986, Fr. R.C. Chacko became the first Indian Regional

Superior, facing challenges of establishing permanent educational structures among dalits and Santhals. By the late 1980s, youth ministry gained prominence, with rallies, exhibitions, and international participation at the Taizé Ecumenical Centre in France.

Conclusion

From its humble beginnings in 1949, the Hazaribag Jesuit mission grew into a vibrant network of schools, parishes, hospitals, and social initiatives. It faced challenges of poverty, famine, and opposition, yet persevered through the dedication of Australian pioneers and local vocations. Education remained its cornerstone, but healthcare, social service, and cultural integration were equally vital. By the 1980s, the mission had firmly established itself as a force for transformation in Jharkhand, blending faith, education, and social justice into a lasting legacy.

Fr. Francis Marian sj

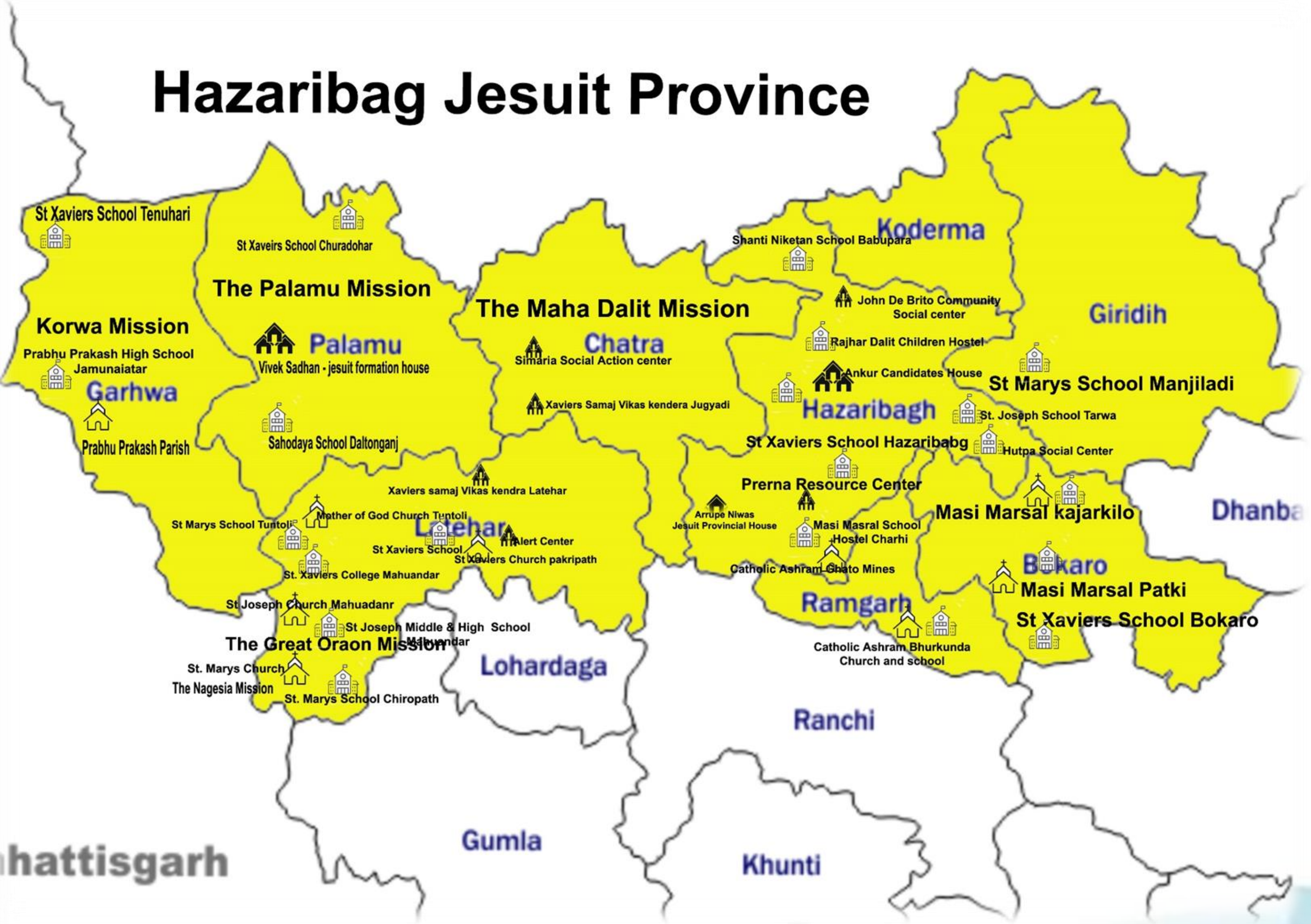

द्वितीय वर्ष, खण्ड ‘अ’

द्वितीय वर्ष, खण्ड ‘ब’

प्रथम वर्ष, खण्ड 'अ'

प्राचार्य और
व्याख्यातागण

द्वितीय वर्ष (सत्र: 2024-26)